भण्डारण भारती

अंक–59

केन्द्रीय भण्डारण निगम

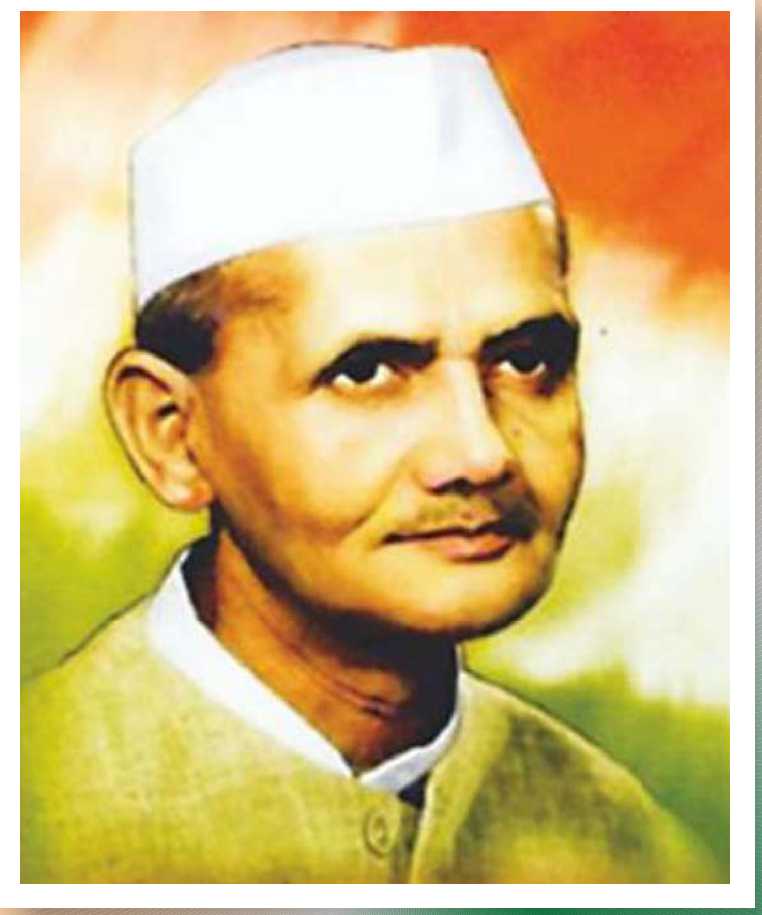

लाल बहादुर शास्त्री

देश के प्रति निष्ठा सभी निष्ठाओं से पहले आती है और ये पूर्ण निष्ठा है क्योंकि इस में कोई प्रतीक्षा नहीं कर सकता की बदले में उसे क्या मिलता है।

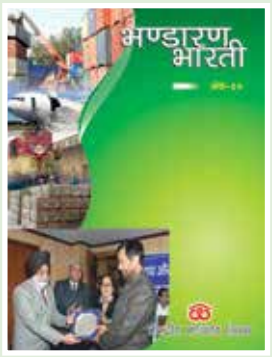

अक्तूबर–दिसम्बर, 2015

मुख्य संरक्षक
हरप्रीत सिंह
प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक
जे. एस. कौशल
निदेशक (कार्मिक)

परामर्शदाता
अनिल कुमार शर्मा
महाप्रबन्धक (कार्मिक)

मुख्य संपादक
नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक
महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप संपादक
रजनी सूद, रेखा दुबे

सहायक संपादक
प्रकाश चन्द्र मैठाणी

संपादन सहयोग
संतोष शर्मा, नीलम खुराना,
शशि बाला, विजयपाल सिंह

केन्द्रीय भण्डारण निगम
(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया, हौज खास, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: **विबा प्रेस प्रा. लि.**, सी-66/3, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली-110020

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका — अंक-59

	विषय	पृष्ठ संख्या
➲	प्रबंध निदेशक की कलम से	03
➲	संपादकीय	04
आलेख		
➢	बुद्धि ही सफलता की कुँजी है – हरिमोहन	05
➢	महानतम हस्तीः अटल बिहारी वाजपेयी – मीना राजपूत	07
➢	आचार – व्यवहार या दृष्टिकोण.. – सुभाष चंद्र	14
➢	अनुवाद एक सृजनात्मक कला – राकेश सिंह परस्ते	19
कविताएं		
❋	मैं उजाला ही करूंगा – निर्भय एन. गुप्ता	06
❋	छोटा-सा गाँव मेरा – वी.के. सिंह	06
❋	सीखने की चाह – दिलीप कुमार यादव	11
❋	जिंदगी और मौत की सच्चाई – बलवान सिंह	21
❋	जिंदगी धूप – छांव – वीना दुग्गल	21
❋	कलम रो पड़ी आज मेरी.... – मनीषा पी सोनी	30
❋	मुक्तक – दिनेश कुमार	35
साहित्यिकी		
↳	लाल हवेली	15
विविध		
♦	बचपन और आधुनिक संस्कृति – नम्रता बजाज	12
♦	जीवन में विचार का महत्व – राम अवतार प्रसाद	18
♦	हंसी है जहाँ, स्वास्थ्य है वहाँ – महिमानंद भट्ट	22
♦	मिलना और बिछुड़ना – मीनाक्षी गंभीर	24
♦	विपरीत परिस्थितियों में भी .... – रजनी सूद	26
♦	जरिया बनो एक मुस्कुराहट का – रेखा दुबे	28
♦	दिशाहीन होती युवा पीढ़ी – विजय पाल सिंह	29
♦	आशावादी – अरविंद मिश्र	31
अन्य गतिविधियां		
☆	सचित्र गतिविधियां	32
☆	खेल समाचार – राजीव विनायक	36
☆	निगम का तुलनात्मक कार्य-निष्पादन एवं प्रशिक्षण.....	37
☆	सेवानिवृति के अवसर पर...	38

संपादक मंडल का लेखकों के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण–अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भंडारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भंडारण, हैण्डलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैण्डलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी०एल०, परामर्शी सेवाएं, मल्टीमॉडल परिवहन आदि के क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्यू चेन की योजना बनाना और उनमें विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा और उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम बनाना व क्रियान्वित करना।

प्रबंध निदेशक की कलम से....

भंडारण भारती के 59वें अंक के माध्यम से मैं निगम के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों, उनके परिजनों तथा पत्रिका के प्रबुद्ध पाठकों को नव वर्ष 2016 की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और उनके मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ। गत वर्ष की अपनी उपलब्धियों से प्रेरणा पाकर हमें नव वर्ष में पूरे उत्साह, निष्ठा एवं समर्पण से कार्य करने का संकल्प लेना है ताकि हम निगम को सफलता के शिखर पर पहुँचाने के लिए प्रयासरत रहें।

निगम राजभाषा की प्रगति के लिए सभी स्तरों पर निरंतर प्रयासरत है जिसके परिणामस्वरूप निगम को राजभाषा के क्षेत्र में निरंतर पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्रालय द्वारा अखिल भारतीय राजभाषा शील्ड के अंतर्गत निगम को वर्ष 2014–15 के लिए राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य निष्पादन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसी योजना के अंतर्गत निगम के क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली को भी विशेष प्रशंसा पुरस्कार प्रदान किया गया। राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2014–15 के लिए उपक्रमों की श्रेणी में क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुम्बई तथा क्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई को नराकास द्वारा तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

राजभाषा से संबंधित विभिन्न जानकारियाँ तत्काल उपलब्ध कराने के उद्देश्य से निगम की वेबसाइट पर पहली बार राजभाषा टैब जोड़ा गया है। इस टैब के माध्यम से निगम के समस्त क्षेत्रीय कार्यालयों सहित सभी वेअरहाउसों को राजभाषा से जोड़ने का प्रयास किया गया है। इसके अतिरिक्त निगम द्वारा नराकास(उपक्रम), दिल्ली के तत्वावधान में आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें 32 उपक्रमों द्वारा भाग लिया गया।

निगम में दिनांक 26 से 31 अक्तूबर, 2015 तक पूरे उत्साह से सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया जिसके माध्यम से भ्रष्टाचार के उन्मूलन का संदेश प्रसारित किया गया और नैतिक मूल्यों पर जोर दिया गया ताकि हम हमारे प्रबुद्ध ग्राहकों के मन में निगम के प्रति विश्वास बनाए रख सकें।

हम सभी जानते हैं कि केन्द्रीय भंडारण निगम वैज्ञानिक भण्डारण के साथ–साथ अपनी गुणवत्ता के लिए भी जाना जाता है। वित्तीय निष्पादन के क्षेत्र में भी निगम आगे बढ़ रहा है। मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए प्रसन्नता है कि पिछले वर्ष के 1528 करोड़ रु. के टर्नओवर की तुलना में वर्ष 2014–15 में 1562 करोड़ रु. का रिकार्ड टर्नओवर प्राप्त किया गया। केन्द्रीय भंडारण निगम ने वर्ष 2013–14 के दौरान अर्जित उच्चतम ग्रॉस ऑपरेटिंग मार्जिन 176 करोड़ रु. की तुलना में 209 करोड़ रु. भी अर्जित किए हैं, जिसमें 18.76% की वृद्धि हुई है। उत्कृष्ट वित्तीय परिणामों को ध्यान में रखते हुए निगम ने गत वर्ष के 48% लाभांश की तुलना में वर्ष 2014–15 में 54% की दर से लाभांश घोषित किया है। निगम द्वारा भारत सरकार को वर्ष 2014–15 के लिए 20.21 करोड़ रुपए का लाभांश दिया गया है। यह सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की सत्यनिष्ठता एवं कठिन परिश्रम को दर्शाता है। इसके अतिरिक्त, निगम अपने निगमित सामाजिक दायित्व के प्रति भी महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व एवं संवेदनशीलता की भावना रखता है तथा अपने सामाजिक दायित्वों को पूरा करने के लिए जागरूक है। निगम विभिन्न निगमित सामाजिक दायित्व एवं सुस्थिर विकास गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए प्रयासरत है।

मुझे विश्वास है कि प्रत्येक अधिकारी तथा कर्मचारी निगम के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के अनुरूप समर्पित भावना से व्यावसायिक गतिविधियों में उत्कृष्टता लाने के साथ–साथ राजभाषा के क्षेत्र में सदैव प्रयासरत रहेंगे और संगठन के हितों को सर्वोपरि रखेंगे।

नव वर्ष की पुनः हार्दिक शुभकामनाएं।

¼gjihr flag½
प्रबंध निदेशक

संपादकीय

भण्डारण भारती निगम की विभिन्न गतिविधियों एवं स्थाई स्तभों सहित आपके समक्ष है। इस पत्रिका के अन्य प्रकाशनों सहित इस अंक में भी सुधी पाठकों के लिए विभिन्न पठनीय सामग्री प्रकाशित की गई है।

निगम अपने मुख्य व्यवसाय वैज्ञानिक भण्डारण के साथ–साथ सरकारी अपेक्षाओं के अनुरूप इस पत्रिका के माध्यम से भी राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प है। इस पत्रिका को पूर्व में मिले पुरस्कारों के आधार पर हम कह सकते हैं कि हम इस दिशा में सफल भी हो रहें हैं।

पत्रिका प्रकाशन एक महत्वपूर्ण कार्य होता है जिसमें प्रूफ संशोधन, संपादन, साज–सज्जा का विषय ध्यान रखना होता है इसलिए सर्वश्रेष्ठ पत्रिका प्रकाशन में निगम के वर्तमान एवं सेवानिवृत अधिकारियों एवं कर्मचारियों का योगदान अपेक्षित है। पत्रिका को नया आयाम देने के उद्देश्य से ही अंक में नए विषयों को स्थान दिया जाता है। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए इस अंक में व्यक्तित्व, व्यवहार, हास्य, अनुवाद एवं जिंदगी जैसे विषयों को शामिल किया गया है। आशा है कि अन्य अंकों की भाँति यह अंक भी पाठकों के लिए रुचिकर एवं पठनीय साबित होगा।

¼uerk ctkt½
प्रबंधक (राजभाषा)

बुद्धि ही सफलता की कुँजी है

* हरिमोहन

''उद्यम, साहसं, धैर्य, बुद्धिः शक्तिः पराक्रम।
षड़ेते यत्र विधन्ते, तत्र देवः सहायकृतः।।

जिसके पास उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति व पराक्रम मौजूद हैं वहां उसकी देवता भी सहायता करते हैं। मनुष्य आचरणशील रहते हुये अपने धैर्य एवं साहस के बल पर बुद्धि को नियंत्रित रखते हुये कठिन से कठिन कार्य को भी सफलतापूर्वक सरलता से कर सकता है।

''ना हो साथ कोई, अकेले बढ़ो तुम।
सफलता तुम्हारे चरण चूम लेगी।।
सदा जो जगाए, बिना ही जगा है,
अंधेरा उसे देखकर ही भगा है,
गगन के बिहारी गरूड़ ही बनो तुम।
प्रखरता तुम्हारे चरण चूम लेगी।।

बुद्धि ही सफलता की कुँजी है। इस संबंध में यह कहानी पूरी तरह से चरितार्थ सिद्ध होती है कि एक किसान अपने गन्ने के खेत में खेत की रखवाली कर रहा था कि दिन के समय में ही चार युवक आये और किसान के सामने ही गन्ने तोड़कर चलने लगे। किसान चारों को देखकर भयभीत हुआ, इस कारण उनसे कुछ कहने का साहस नहीं कर सका। उसी समय उसे एक युक्ति समझ में आई और उसने चारों युवकों को पुकारते हुये कहा कि भाईयों ठहरिये, आप लोगों ने इतनी मेहनत से गन्ने तोड़े हैं, मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि थोड़ा पानी तो पीते जाइए। चारों युवक किसान की बात सुनकर अचम्भित हुये और आपस में कहने लगे कि एक तो हमने इसके खेत से गन्ने चोरी किये हैं और दूसरे यह विनम्र भाव से पानी पीने के लिए भी कह रहा है। ऐसा लगता है कि किसान बहुत ही दयावान है। चारों युवकों ने किसान से पानी पिया तथा किसान ने पानी पिलाते समय चारों युवकों से प्रश्न किया कि क्या आप अपना परिचय बता सकते हैं? प्रश्न के उत्तर में चारों ने अपना परिचय इस प्रकार दिया, पहले युवक ने कहा कि 'मैं क्षत्रिय हूँ', दूसरे ने कहा 'मैं ब्राह्मण हूँ', तीसरे ने कहा कि 'मैं वैश्य हूँ' तथा चौथे ने कहा कि मैं एक साधारण किसान हूँ। जब चारों युवकों ने अपना परिचय दे दिया तो उस खेत के किसान के मन में एक युक्ति आई वो यह कि उसने चारों युवकों से कहा कि मेरी माँ ने मुझे एक बात बताई थी, वो मैं आप सभी से साझा करना चाहता हूँ। ऐसा कहकर उसने चौथे युवक को जो एक साधारण किसान था, उसे एकान्त में ले जाकर कहा कि क्षत्रिय का कर्तव्य है कि वह रक्षा करे, ब्राह्मण का कर्तव्य है कि वह ज्ञान की शिक्षा दे, वैश्य का लेन–देन का कार्य है और किसान का कार्य है कि वह जमीन में खाद्यान्न का उत्पादन करे, यदि आप किसान होते हुये अपनी जमीन में खाद्यान्न का उत्पादन नहीं कर सकते तो आपको किसान होने के नाते गन्ने तोड़ने से पहले मुझसे पूछना चाहिए था। परन्तु आपने ऐसा नहीं किया इसलिए आप गन्ना चोरी करने के अपराधी हैं। इतना कहकर किसान ने उसको एक पेड़ से बाँध दिया और वापस उन तीनों के पास आया और वैश्य को अलग ले जाकर कहा कि मेरी माँ ने कुछ शिक्षा दी थी, वो मैं आपको बताना चाहता हूँ और कहा कि भाई वैश्य होने के नाते आपका कार्य लेन–देन है। मैं जो खेती कर रहा हूँ, इस संबंध में मैने कभी आपसे कोई लेन–देन नहीं किया है परन्तु फिर भी आपने मेरे खेत से गन्ने तोड़ने का साहस क्यों किया? आपको गन्ने तोड़ने से पहले मेरी आज्ञा अर्थात् मुझसे पूछ लेना चाहिए था। इस कारण आप अपराधी की श्रेणी में आते हैं। ऐसा कहते हुये किसान ने उस वैश्य को भी एक पेड़ से बाँध दिया तथा वापस ब्राह्मण और क्षत्रिय के पास आया तथा उनमें से ब्राह्मण को भी अपने खेत

*भण्डारण एवं निरीक्षण अधिकारी, सैन्ट्रल वेअरहाउस, जनता रोड, सहारनपुर–प्रथम

की दूसरी दिशा में ले गया और उससे भी अपनी माँ द्वारा दी गई शिक्षा का हवाला देते हुये यह कहा कि आप तो लोगों को ज्ञानवर्धक बातों की शिक्षा देते हैं, परन्तु आपने ब्राह्मण होते हुये, मेरी मौजूदगी में ही, मुझसे बिना पूछे मेरे खेत से गन्ने तोड़ लिये। इस अपराध की सजा आपको अवश्य मिलेगी और ऐसा कहते हुये किसान ने ब्राह्मण को भी एक पेड़ से बाँध दिया तथा वापिस क्षत्रिय के पास आता है और मन ही मन उत्साहित होता है कि अब तो यह यहाँ अकेला है मैं भी इससे कम ताकतवर नहीं हूँ अब यह मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। ऐसा सोचकर उसने क्षत्रिय से गंभीरतापूर्वक कहा कि आपका कार्य तो दूसरों की रक्षा करना था परन्तु आपने क्षत्रिय धर्म का पालन नहीं किया और मेरी उपस्थिति में ही मेरे खेत की रक्षा करने के स्थान पर गन्ने तोड़कर उजाड़ने लगे तथा मुझसे पूछना भी उचित नहीं समझा। इस कारण आप चोरी के जुर्म में सजा के पात्र हैं। ऐसा कहते हुये किसान ने उस क्षत्रिय को भी एक पेड़ से बाँध दिया। इस प्रकार चारों युवकों को अपनी बुद्धिमता से पुलिस को सूचित कर सौंप दिया। पुलिस ने भी किसान की बुद्धिमता की सराहना की। कहने का तात्पर्य है कि हम अपने अन्दर पनपते हुए काम, क्रोध, भ्रष्टाचार तथा बुरी आदतों को एक–एक करके संहार कर समाप्त कर सकते हैं, ऐसा ही उस किसान ने किया। यदि किसान चारों युवकों से एक साथ उलझता तो किसान का ही संहार हो जाता। परन्तु उसने उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति एवं पराक्रम से कार्य किया। इसलिए वह अपने कार्य में सफल हो गया।

मैं उजाला ही करूँगा

*** निर्भय एन. गुप्ता**

दीप ने हंसते हुए मुझसे कहा,
मैं रहूंगा जब तक, मैं उजाला ही करूँगा।

तुम चले आओ अंधेरा साथ ले आओ,
घने गहरे अंधेरे हों मगर विश्वास दूं आओ,
अंधेरे सब मिटेंगे, रोशनी होगी यहीं मानो,
मैं तुम्हें विश्वास देता ये मेरा वादा रहा,
जब तक जीवित रहूंगा, मैं उजाला ही करूँगा।

कौन कहता ये अंधेरा बहुत गहरा है,
हो गया है अति भयावह और ठहरा है,
दिग्भ्रमित मत हो, भरोसा तुम रखो,
मैं तुम्हें विश्वास देता ये मेरा वादा रहा,
जब तक जीवित रहूंगा, मैं उजाला ही करूँगा।

पाप ही तम है, झूठ ही तम है,
अत्याचारों, अनाचारों का दुरतिक्रम है,
क्यों निराशा से ग्रसित हो, क्यों परेशां हो,
मैं तुम्हें विश्वास देता ये मेरा वादा रहा,
जब तक जीवित रहूंगा, मैं उजाला ही करूँगा।

छोटा-सा गाँव मेरा

*** वी.के. सिंह**

छोटा–सा गाँव मेरा, पूरा बिग बाजार था...

एक नाई, एक मोची, एक कालिया लोहार था...

छोटे–छोटे घर थे, हर आदमी दिलदार था...

कहीं भी रोटी खा लेते, हर घर में भोजन तैयार था...

बड़ी की सब्जी मजे से खाते थे, जिसके आगे शाही पनीर बेकार था...

दो मिनट की मैगी ना पिज्जा, झटपट टिकड़ाँ, भूजिया, आचार या फिर दलिया तैयार था...

नीम की निम्बोली और बोरिया सदाबहार था...

रसोई के परात या घड़ा बजा लेते, भंवरु पूरा संगीतकार था...

मुल्तानी माटी से तालाब में नहा लेते, साबुन और स्वीमिंग पुल बेकार था...

और कहीं कबड्डी खेल लेते, हमें कहाँ क्रिकेट का खुमार था...

दादी की कहानी सुन लेते, कहाँ टेलिविजन अखबार था...

भाई–भाई को देख के खुश था, सभी लोगों में प्यार था...

छोटा–सा गाँव मेरा, पूरा बिग बाजार था...

*पूर्व क्षेत्रीय प्रबंधक, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

*भण्डारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

महानतम हस्ती : अटल बिहारी वाजपेयी

* डॉ. मीना राजपूत

''भारत जमीन का टुकड़ा भर नहीं है। यह जीता–जागता राष्ट्र पुरुष है। हिमालय मस्तक है, गौरी शंकर इसकी शिखा है। कश्मीर इसका मुकुट है, पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं। विन्ध्याचल कटि है, नर्मदा करधनी है। पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघायें हैं। कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर उसके चरण पखारता है। पावस के काले–काले मेघ इसके कुंतल केश हैं। चाँद और सूरज इसकी आरती उतारते हैं। यह वंदन की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है। अभिनन्दन की भूमि है। यह तर्पण की भूमि है। इसका कंकर–कंकर शंकर है, इसका बिन्दु–बिन्दु गंगाजल है। हम जियेंगे तो इसके लिये, मरेंगे तो इसके लिये।''

भारत देश के प्रति असीम गर्व और गौरव की अनुभूति कराती ये देशभक्तिपूर्ण पंक्तियाँ हैं पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी की, जो उन्होंने एक अवसर पर भारत भूमि की महत्ता का बखान करते हुए अपने भाषण में कहीं थीं।

मनसा, वाचा, कर्मणा से श्रेष्ठ भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का जन्म 25 दिसम्बर, 1924 को लश्कर, ग्वालियर, मध्य प्रदेश में हुआ। अटल जी के दादा पंडित श्यामलाल वाजपेयी संस्कृत के जाने–माने विद्वान थे। उनके पिता पंडित कृष्ण बिहारी वाजपेयी अध्यापक थे, जो प्रिंसिपल और विद्यालय निरीक्षक के सम्मानित पद तक पहुँच गए थे। अटल जी की माता कृष्णा देवी घरेलू महिला थीं।

अध्ययन के प्रति बचपन से ही प्रगाढ़ रुचि रखने वाले अटल जी की आरंभिक शिक्षा बड़ नगर के गोरखी विद्यालय में हुई, जहाँ उनके पिता प्रधानाध्यापक के पद पर कार्यरत थे। बड़नगर में उच्च शिक्षा व्यवस्था न होने के कारण मेधावी अटल जी ने ग्वालियर स्थित विक्टोरिया कॉलेजियट स्कूल से नौंवी कक्षा से इंटरमीडिएट तक की पढ़ाई की। साहित्य में रुचि होने के चलते उन्होंने संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी विषय लेकर स्नातक स्तर की शिक्षा विक्टोरिया कॉलेज (लक्ष्मीबाई कॉलेज) से उच्च श्रेणी में तथा उत्तर प्रदेश की व्यावसायिक नगरी कानपुर के प्रसिद्ध शिक्षा केन्द्र डी.ए.वी. कॉलेज से राजनीति शास्त्र में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कानपुर में ही उन्होंने एल.एल.बी. में भी प्रवेश लिया था, परन्तु इसी दौरान पत्रकारिता से जुड़ जाने के कारण अपने कार्य के प्रति निष्ठावान अटल जी को वकालत की पढ़ाई अधूरी छोड़नी पड़ी।

मेधावी अटल जी ने विद्यालय जीवन में ही प्रखर वक्ता के रूप में अपनी पहचान स्थापित कर ली थी। उन्होंने पाठ्येतर गतिविधियों के अंतर्गत पहली बार भाषण कक्षा पाँचवीं में दिया था। वाद–विवाद संबंधी उनकी प्रतिभा नौंवी कक्षा में ही निखर गई थी। कॉलेज जीवन में ही उन्होंने राजनीतिक गतिविधियों में हिस्सा लेना और भाषण देना आरंभ कर दिया था। 1943 में वे कॉलेज यूनियन के सचिव और 1944 में उपाध्यक्ष बने। अपने प्रारंभिक जीवन में ही वे राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़ गए। 1946 में संघ के प्रचारक बने और इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को आजीवन अविवाहित रह पूरे संकल्प और निष्ठा से निभाया। उन्होंने संघ की पत्रिका 'राष्ट्र धर्म' का 1947–50 के दौरान तथा साप्ताहिक 'पाँचजन्य' का 1948–50 के दौरान सम्पादन किया। बाद में वे वाराणसी से प्रकाशित 'चेतना' के, 1949–50 के दौरान लखनऊ से प्रकाशित दैनिक 'स्वदेश' के और दिल्ली से प्रकाशित दैनिक तथा साप्ताहिक 'वीर अर्जुन' के 1950–52 के दौरान सम्पादक रहे। अटल जी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में कुछ ही वर्षों में अपने को स्थापित कर ख्याति अर्जित की। उनके द्वारा लिखित सम्पादकीय भी अत्यन्त सराहे गए और चर्चा का केन्द्र बने।

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुम्बई

पत्रकारिता से अपना जीवन आरंभ कर भारतीय राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाने वाले अटल जी के चिन्तन और चिन्ता का विषय हमेशा ही सम्पूर्ण राष्ट्र रहा। उन्होंने राष्ट्र के सम्मान को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। राष्ट्र हित को सर्वोपरि मानते हुए राष्ट्रीय मुद्दों पर दो टूक निर्णय लिए। स्पष्टवादी व निर्भीक अटल जी की कथनी और करनी सदा एक ही बनी रही। उन्होंने जो कहा, वह कर दिखाया। अपनी क्षमता, बौद्धिक कुशलता, निःस्वार्थता व सफल वक्ता के गुणों के चलते भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के निजी सचिव बने और मुखर्जी जी की असमय मृत्यु के बाद जनसंघ की कमान संभाली। डॉ. मुखर्जी और पंडित दीनदयाल उपाध्याय के निर्देशन में राजनीति का पाठ पढ़ने वाले अटल जी को भारत छोड़ो आन्दोलन के समय 23 दिन के लिए गिरफ्तार किया गया। उसी दौरान उन्होंने अगस्त 1942 में राजनीति में अपना कदम रखा। अटल जी 1951 में भारतीय जन संघ के संस्थापक सदस्य बने। उन्होंने 1955 में लखनऊ से पहली बार लोक सभा चुनाव लड़ा, लेकिन हार गए। 1957 में बलरामपुर सीट से चुनाव जीतकर वे लोक सभा पहुँचे। 1957 से 1977 तक, जनता पार्टी की स्थापना तक, लगातार 20 वर्षों तक जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहे। 1968 से 1973 तक वे भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष रहे। मोरारजी देसाई जी की सरकार में 1977 से 1979 तक पहले गैर कांग्रेसी विदेश मंत्री बने और विदेशों में भारत की छवि निखारी। 1980 में भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक सदस्य तथा 1980 से 1986 तक वे उसके अध्यक्ष रहे। इस दौरान वे भा.ज.पा. संसदीय दल के नेता भी रहे। 2 बार वे राज्य सभा के लिए भी निर्वाचित हुए। अपनी प्रतिभा, नेतृत्व क्षमता, लोकप्रियता और जुझारू प्रवृत्ति के चलते वे चार दशकों से भी अधिक समय भारतीय संसद के सांसद रहे।

लोकतंत्र के सजग प्रहरी अटल जी ने 16 मई 1996 को प्रधानमंत्री के रूप में देश की बागडोर संभाली, लेकिन लोकसभा में बहुमत साबित न कर पाने की वजह से 31 मई 1996 को उन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। अल्प बहुमत के कारण संसदीय लोकतंत्र के प्रधानमंत्री के जिस सर्वोच्च पद से उन्हें त्याग–पत्र देना पड़ा था, उसी पद पर विनम्र, कुशाग्र बुद्धि एवं अद्वितीय प्रतिभा के धनी अटल जी लगभग 22 माह बाद 19 मार्च, 1998 को प्रधानमंत्री के पद पर दोबारा आसीन हुए। उनके नेतृत्व में 13 दलों की गठबंधन सरकार ने 19 मार्च, 1998 से 22 मई, 2004 तक देश की प्रगति के अनेक आयाम छुए। वे पहले प्रधानमंत्री थे जिन्होंने गठबंधन सरकार को न केवल स्थायित्व प्रदान किया, अपितु सफलतापूर्वक संचालित भी किया। जवाहरलाल नेहरू व इन्दिरा गाँधी के बाद सबसे लम्बे समय तक गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री भी वही रहे। अटल जी ने 41 वर्ष की अवधि में नेता, सांसद, मंत्री से देश के प्रधानमंत्री तक की भूमिका को बखूबी निभाया और इतने लम्बे सफर में अपनी गौरवपूर्ण उपस्थिति से देश और संसद की गरिमा की श्रीवृद्धि में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

4 अक्तूबर, 1977 को उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन में हिन्दी में भाषण देकर एक नया इतिहास रचा और भारत को गौरवान्वित किया। इससे पहले किसी ने भी राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रयोग इस मंच पर नहीं किया था। विदेशी मामलों के विशेषज्ञ अटल जी ने प्रधानमंत्री रहते हुए चीन से भी संबंध बेहतर बनाने की कोशिश की। नेपाल के विदेश मंत्री के साथ व्यापार और पारगमन की नई नीति के संबंध में भी चर्चा की।

धर्मनिरपेक्षता के समर्थक, सर्वधर्म समभाव के उपासक, ओजस्वी, प्रभावी एवं पटु वक्ता अटल जी धर्म और राजनीति के सम्मिश्रण के कट्टर विरोधी थे। मजहबी आधार पर गुट बनाने की प्रवृत्ति को खतरनाक बताते हुए उन्होंने भारत सरकार को इस बारे में आगाह किया और भारतीय संविधान की धारा 370 के अंतर्गत कश्मीर को प्रदान विशिष्ट दर्जे का विरोध करते हुए इस धारा को समाप्त करने की मांग की। उन्होंने भारत सरकार से मांग की कि इस धारा के बजाय कश्मीर में रोजगार के साधन उपलब्ध कराए जाएं और शिक्षा के स्तर में वृद्धि की जाए। उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले सम्मेलन विश्व बन्धुत्व के आधार पर किए जाने की भी बात कही।

राजनैतिक नेतृत्व के आदर्श व भारत के 11वें प्रधानमंत्री अटल जी ने विज्ञान और तकनीकी की प्रगति के साथ देश का भविष्य जोड़ा और परमाणु शक्ति को देश के लिए आवश्यक बताया। 11 और 13 मई, 1998 को राजस्थान

के पोखरण में परमाणु परीक्षण करके देश की सुरक्षा के लिए साहसी कदम उठाते हुए अपने दृढ़ नेतृत्व का परिचय दिया। विश्व को भारत की परमाणु क्षमता व शक्ति का अहसास कराया और भारत को निर्विवाद रूप से सुदृढ़ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित किया। उनके द्वारा उठाए गए इस अनोखे व अनुपम कदम के कारण परमाणु–शक्ति सम्पन्न पश्चिमी देशों द्वारा भारत पर लगाए गए अनेक प्रतिबंधों का दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए आर्थिक विकास की ऊचाइयों को छुआ। उन्होंने भारत को 'जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान' का नारा दिया।

अटल जी ने अपने पड़ोसी देशों, खासकर भारत और पाकिस्तान, के बीच तल्ख रिश्तों को सुधारने का प्रयास किया। पाकिस्तान के साथ मधुर संबंध बनाने की पहल करते हुए उन्होंने 19 फरवरी, 1999 को सदा–ए–सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरू की। इस सेवा का उद्घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में अटल जी ने पाकिस्तान की यात्रा करके पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से मुलाकात की और आपसी संबंधों की एक नयी शुरूआत की। लेकिन, इसके कुछ समय पश्चात् पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज़ मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों द्वारा कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा किए जाने पर पाकिस्तान की सीमा का उल्लंघन न करने की अन्तर्राष्ट्रीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किन्तु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया। कारगिल युद्ध में पाकिस्तान के छक्के छुड़ाने वाले तथा उसे पराजित करने वाले भारतीय सैनिकों का मनोबल बढ़ाया। उन्होंने इसे अपने भाषण में कुछ इस तरह व्यक्त किया – ''वीर जवानो! हमें आपकी वीरता पर गर्व है। आप भारत माता के सच्चे सपूत हैं। पूरा देश आपके साथ है। हर भारतीय आपका आभारी है।''

भारतीय जनता पार्टी को राजनीति के केन्द्र में लाने में अहम भूमिका निभाने वाले अटल जी के शासनकाल में राष्ट्रीय राजमार्गों एवं हवाई अड्डों के विकास, नई टेलीकॉम नीति तथा कोंकण रेलवे की शुरुआत और बुनियादी संरचनात्मक ढ़ांचे को मजबूत करने वाले कई महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। ऐसा कहा जाता है कि उनके शासनकाल में भारत में जितनी सड़कों का निर्माण हुआ इतना सिर्फ दूरदर्शी शेरशाह सूरी के समय में ही हुआ था। भारत के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना की शुरुआत भी उन्होंने ही की थी। इसके अंतर्गत दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई व मुम्बई महानगरों को राजमार्ग से जोड़ा गया। इससे जहाँ आम व्यक्ति की यात्रा सुविधाजनक हुई, वहीं व्यापारिक और कारोबारी गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिला। 100 साल से भी ज्यादा पुराने कावेरी जल विवाद को सुलझाया गया। उन्हीं के शासनकाल में अमेरिका के साथ भारतीय संबंधों को सुधारने की दिशा में भी कार्य किया गया।

सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में सक्रिय रहे विवेकी और संयमी अटल जी के पुख्ता कार्यों के साथ उनके व्याख्यानों, भाषणों, अकाट्य तर्कों का भी सभी लोहा मानते हैं। 11 भाषाओं के ज्ञाता व वक्तृत्व कला के धनी अटल जी की बातों और भाषणों में शब्दों का चयन, सधा हुआ व उपमाओं, मुहावरों, सूक्तियों सहित प्रभावी प्रयोग, बोलते समय प्रभावपूर्ण तरीके से रुकना, करारे कटाक्ष करना, हास्य के बीच अपनी विशिष्ट व्यंग्य शैली में छोटी–बड़ी बातों को सहज ढंग से व्यक्त कर देने की कला, नपी–तुली और बेबाक टिप्पणियाँ, श्रोताओं का मन भांप लेने की क्षमता बरबस श्रोताओं का मन मोह लेती है।

विपक्षी को अपनी सादगी, नैतिकता और उच्च आदर्शों से कायल करने वाले प्रतिभा सम्पन्न अटल जी प्रखर नेता होने के साथ–साथ विचारवान लेखक और संवेदनशील कवि भी हैं। अटल जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में मिले। उनके पिता अध्यापन के साथ–साथ काव्य रचना भी करते थे और ग्वालियर रियासत में अपने जमाने के जाने–माने कवियों में थे। वे ब्रजभाषा और खड़ी बोली में काव्य रचना करते थे। उनकी लिखी 'ईश्वर प्रार्थना' रियासत के सभी विद्यालयों में सामूहिक रूप से गायी जाती थी। उनके पितामह पंडित श्यामलाल वाजपेयी, यद्यपि स्वयं कवि नहीं थे, किन्तु संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं के काव्य–साहित्य में उनकी गहरी रुचि थी। दोनों भाषाओं के सैंकड़ों छन्द उन्हें कंठस्थ थे और बातचीत में उन्हें उद्धृत करते रहते थे। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण उन्हें भी लिखने

में सदा रुचि रही। राजनीतिक व्यस्त जीवन में भी अटल जी ने अनेक पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें 'लोकसभा में अटल जी', 'मृत्यु या हत्या', 'अमर बलिदान', 'कैदी कविराय की कुण्डलियाँ', 'संसद में चार दशक', 'अमर आग है', 'कुछ लेखः कुछ भाषण', 'सेक्यूलर वाद', 'राजनीति की रपटीली राहें', 'बिन्दु बिन्दु विचार', 'न्यू डाइमेंशन ऑफ इंडियन फॉरेन पॉलिसी', 'फोर डिकेड्स इन पार्लियामेंट' तथा प्रसिद्ध कविता संग्रह 'मेरी इक्यावन कविताएँ' व 'न दैन्यं न पलायनम्' प्रमुख हैं। वे एक साथ छंदकार, छंदमुक्त रचनाकार, गीतकार, सशक्त गद्यकार तथा व्यंग्यकार हैं। एक ओर उनकी कविता का स्वर राष्ट्रप्रेम है तो दूसरी ओर सामाजिक तथा वैचारिक विषयों पर भी उन्होंने कविताएं लिखी हैं। संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियों, राष्ट्रव्यापी आन्दोलनों, जेल–जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति को अभिव्यक्त करती हैं।

अटल जी की कविताएं उनके मन का दर्पण हैं, जो जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में उनकी मनःस्थिति को जस–का–तस अभिव्यक्त करती हैं। परिस्थिति सापेक्ष उनकी ये कविताएं आसपास की दुनिया को प्रतिबिम्बित करती हैं। उनके मन की पवित्रता, निश्छलता और व्यक्तित्व को उजागर करती उनकी कविताएं उनके जीवन का पर्याय हैं।

अटल जी ने हमेशा दूसरों की बजाय अपने आप से अपनी तुलना कर प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है। उनके अन्तर्मन की इसी व्यथा और अन्तर्द्वंद्व को प्रकट करती उनकी एक काव्य पंक्ति है –

हर 25 दिसम्बर को
जीने की नई सीढ़ी चढ़ता हूँ
नए मोड़ पर औरों से कम
स्वयं से ज्यादा लड़ता हूँ।

'दो अनुभूतियाँ' कविता में अटल जी टूटे सपने और अन्तःव्यथा की अनुभूति होते हुए भी अपने आप से प्रण करते हुए दिखाई देते हैं –

हार नहीं मानूँगा, रार नहीं ठानूँगा
काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ
गीत नया गाता हूँ

'मौत से ठन गई' कविता में चुनौतियों का सामना करने का आह्वान करती पंक्तियाँ –

हर चुनौती से दो हाथ मैंने किये,
आँधियों में जलाए हैं बुझते दिए।

'जो बरसों तक सड़े जेल में' कविता के माध्यम से देशभक्त अटल जी ने स्वतंत्रता सेनानी वीर सावरकर, भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु को याद किया है –

जो बरसों तक सड़े जेल में, उनकी याद करें।
जो फांसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करें।
याद करें काला पानी को
अंग्रेजों की मनमानी को
कोल्हू में जुट तेल पेरते
सावरकर से बलिदानी को।
याद करें बहरे शासन को
बम से थर्राते आसन को
भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु
के आत्मोत्सर्ग पावन को।

सामाजिक बदलाव के चलते अपनी लड़ाई स्वयं लड़ने और परिस्थितियों से अकेले जूझने की विवशता और समाज में आम जनता की दयनीय स्थिति का सटीक चित्र प्रस्तुत करती उनकी कविता 'कौरव कौन, कौन पांडव' की पंक्तियाँ–

हर पंचायत में पांचाली
अपमानित है।
बिना कृष्ण के आज
महाभारत होना है।
कोई राजा बने
रंक को तो रोना है।

विनम्र और सौम्य अटल जी की कविता में प्रकट उनकी नम्रता –

मेरे प्रभु
मुझे इतनी ऊँचाई कभी मत देना
गैरों को गले न लगा सकूँ
इतनी रुखाई, कभी मत देना।

अटल जी की कविताएं, कविताएं नहीं, बल्कि उनकी साधना है। उनकी जुझारू प्रवृत्ति का द्योतक हैं। उनकी कविताएं जिन्दगी के हर क्षेत्र में आने वाली कठिनाइयों का दृढ़ता से सामना कर अपना मार्ग प्रशस्त करना सिखाती हैं। वे स्वयं कहते हैं कि ''मेरी कविता जंग का ऐलान है, पराजय की प्रस्तावना नहीं। वह हारे हुए सिपाही का नैराश्य–निनाद नहीं, जूझते योद्धा का जय–संकल्प है। वह निराशा का स्वर नहीं, आत्मविश्वास का जयघोष है।'' सुप्रसिद्ध गजल गायक जगजीत सिंह जी ने अटल जी की चुनिन्दा कविताओं को संगीतबद्ध करके एक एल्बम भी निकाला है।

अपने जीवन का प्रत्येक क्षण और शरीर का प्रत्येक कण राष्ट्रसेवा के यज्ञ में अर्पित करने वाले भारतीय राजनीति के सबसे प्रतिष्ठित व सम्माननीय नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को 1992 में 'पद्म विभूषण' से, 1994 में श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार, गोविंद वल्लभ पंत पुरस्कार और लोकमान्य तिलक पुरस्कार से सम्मानित किया गया। राजनीति में अमूल्य योगदान देने के लिए दिसम्बर, 2014 में भारत सरकार द्वारा अटल जी को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से भी सम्मानित किया गया।

सीखने की चाह

*** दिलीप कुमार यादव**

मुझमें सीखने की चाह है निरंतर, जाने क्या–क्या न सीख लिया मैंने,
मुस्कुराहटों से तेरी जीना सीख लिया मैने, गम–ए–जिन्दगी का जहर पीना सीख लिया मैंने।

लाख मुसीबतें हों सच्चाई की राहों में, चैन मिलता है मुझे इनकी ही पनाहों में।
सच्चाई की हमेशा ही जीत होती है, प्रत्येक हार में एक सीख छुपी होती है।
थाम कर सच्चाई के दामन को, इस पथ से गुजरना भी सीख लिया मैने।
मुस्कुराहटों से तेरी जीना सीख लिया मैने, गम–ए–जिन्दगी का जहर पीना सीख लिया मैंने।

मुश्किलें जिन्दगी का आधार होती हैं, इन्सान के जीवन का सार होती हैं।
मुस्कुराने से गम भी छुप जाते हैं, बहते हुए अश्क भी रुक जाते हैं।
जो हालात हमसे बदले नहीं जा सकते, उन हालतों में जीना, सीख लिया मैंने।
मुस्कुराहटों से तेरी जीना सीख लिया मैंने, गम–ए–जिन्दगी का जहर पीना सीख लिया मैंने।

जिन्दगी खार का बिस्तर है तो क्या, लिबास में टाट का अस्तर है तो क्या।
आखिर हर इन्सान को जीना ही होता है, अमृत हो या जहर पीना ही होता है।
नींद पर आंखों का जोर नहीं चलता, इसलिए खारों पे सोना सीख लिया मैंने।
मुस्कुराहटों से तेरी जीना सीख लिया मैने, गम–ए–जिन्दगी का जहर पीना सीख लिया मैने।

तेरी एक मुस्कान से दिल को सुकून मिलता है, जिन्दगी से दो–चार होने का जुनून मिलता है।
मुस्कुराहटें इन्सान को जीना सिखाती हैं, इन्सान को इन्सान के करीब लाती हैं।
प्यार से जीना ही जिन्दगी है ए–दोस्त, इस फलसफे का करीना सीख लिया मैने।
मुस्कुराहटों से तेरी जीना सीख लिया मैने, गम–ए–जिन्दगी का जहर पीना सीख लिया मैने।

चाहतों से मंजिलें नसीब होती हैं, दूरियां भी कदमों के करीब होती हैं।
राह चलने से ही फासले, खत्म होते हैं, हो हौसला बुलन्द तो गम भी हमदम होते हैं।
है प्यार जिन्दगी में तो बहार जिन्दगी है, जिन्दगी के हर मुकाम को जीतना सीख लिया मैंने।
मुस्कुराहटों से तेरी जीना सीख लिया मैने, गम–ए–जिन्दगी का जहर पीना सीख लिया मैने।

*वेअरहाउस सहायक–I, क्षेत्रीय कार्यालय, लखनऊ

बचपन और आधुनिक संस्कृति

* नम्रता बजाज

अचानक से सलोनी ''मम्मी, मम्मी!' कहकर चिल्लाने लगी। मम्मी किचन से आते हुए बोली, 'अरे, क्या हुआ बेटा, इतना क्यों चिल्ला रही है'। 'मम्मी आपको पता है, बगल वाले चौक पर एक और मॉल खुल गया है। अब तो मैं जब चाहूं वहाँ जाकर झूले झूल सकती हूँ, शॉपिंग कर सकती हूँ। अब आप मुझे नहीं कह सकते कि आज नहीं फिर कभी चलेंगे, क्योंकि अब तो मॉल हमारे घर के बिल्कुल पास आ गया है।' आठ साल की सलोनी चहकती हुई बोली।

यह नज़ारा आज लगभग सभी घरों का है। आज के बच्चों की ओर देखें तो उन्हें शॉपिंग, झूले, खाना–पीना, मौज–मस्ती आदि ही दिखाई देता है क्योंकि आज के समाज में यही सब चीजें प्राथमिकता बन गई हैं। अधिकतर लोग अपने परिवार के दायरे में ही कैद हैं। उन्हें किसी और से कोई सरोकार नहीं। आज सभी लोगों को अपनी ज़िंदगी में एक ही चीज़ चाहिए जिसे आज की पीढ़ी ने शब्द दिया है, 'फन' यानि मौज–मस्ती। इसके लिए वे कुछ भी करने को तैयार हैं, किसी की भावनाओं, पीड़ा आदि को समझने का उनके पास समय ही नहीं है। यही आगे आने वाली हमारी भावी पीढ़ी भी सीख रही है। यह भी एक सच है कि आज की तनावपूर्ण ज़िंदगी में सभी को थोड़ी राहत चाहिए, घूमना–फिरना चाहिए परन्तु यह सब एक जुनून बनता जा रहा है, जो समाज के प्रति ज़्यादती है।

एक फिल्म का गीत सहज ही याद आता है–
''बच्चे, मन के सच्चे,
सारे जग की आँख के तारे।
हम वो नन्हे फूल हैं,
जो भगवान को लगते प्यारे।।''

यह पंक्तियाँ मन को छूने वाली हैं और आँखों के समक्ष भोले और मासूम बच्चे का चेहरा सामने ले आती हैं। छोटे–छोटे बच्चों को देख सहज ही मन में प्यार का सागर उमड़ने लगता है। पर इन्हीं छोटे बच्चों को बड़ों की तरह बातें करते देख हम हंसते तो हैं, साथ ही हैरानी भी होती है। छह महीने के बच्चे भी मोबाइल, टी.वी, लैपटॉप आदि की आवाज पहचानते हैं। यदि हम अपने चारों ओर के वातावरण पर नज़र डालें तो यही दिखाई देता है कि हमने अपने बच्चों का बचपन कहीं छीन लिया है। मुझे गुड़गाँव के एक मॉल में जाने का अवसर मिला। वहाँ जाकर ऐसा लगा कि हम हिन्दुस्तान में नहीं, विदेश के किसी मॉल में आ गए हैं। सभी में एक प्रकार का अहम दिखाई दिया। लोगों की भीड़ देखकर ऐसा लग रहा था कि सब सामान फ्री में मिल रहा है। उनके पास पैसे की कोई कमी नहीं और साथ ही अहम, अशिष्ट और रूखे व्यवहार की भी कमी नहीं। अधिकतर लोग अंग्रेज़ी में बात कर रहे थे जैसे कि हिंदी में बात करेंगे तो उनकी छवि बिगड़ जाएगी। वह भारतीय कम और अंग्रेज़ बनने में अधिक गर्व महसूस कर रहे थे। अपने देश की भाषा में बात करना तो वह अपनी तौहीन समझ रहे थे। बड़े ही नहीं बच्चों में भी यह व्यवहार सहज ही दिखाई दे रहा था। बच्चे तो कच्चे घड़े के समान होते हैं, जिन्हें जैसा रूप, रंग और आकार दो, वह वैसे ही ढल जाते हैं। यदि हम विभिन्न वातावरणों में पल–बढ़ रहे बच्चों का अध्ययन करें तो हम पाएंगे कि सभी वर्गों में हर पल, हर क्षण बच्चों से उनका बचपन छीना जा रहा है।

यदि उच्च आय वर्ग के बच्चों की ओर नज़र डालें तो उनके चेहरे पर मासूमियत के स्थान पर एक प्रकार गुरूर, एक ठसक दिखाई देती है। मानो सारे संसार की खुशियाँ सिर्फ उनके लिए हैं, बाकी बच्चों का उन पर कोई

*प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

अधिकार नहीं है। यही गुरूर आगे चलकर उन्हें नकचढ़ा और घमंडी बना देता है और वह सभी को हेय दृष्टि से देखने लगते हैं, भले ही उन्होंने स्वयं कोई उपलब्धि हासिल की हो या ना की हो। जीवन में इसके अनेक दुष्परिणाम भी देखने को मिलते हैं। जीवन में कभी पैसे कम होने या सुख–सुविधाओं की कमी होने पर यह बच्चे संतुलित नहीं रह पाते क्योंकि इसकी इन्हें आदत ही नहीं होती। अपनी बढ़ी हुई ज़रूरतें पूरी करने के लिए या तो यह बच्चे अपराधी बनकर दूसरों से चीज़ें छीनने की कोशिश करते हैं और या फिर अपनी कमज़ोरी के कारण अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर लेते हैं। इस सबका दोष हम किसके सिर डालें– माता–पिता, समाज, परिवेश या बदलती आधुनिक शैली पर।

आज वैश्वीकरण के इस दौर में बच्चों को इंटरनेट, मोबाइल आदि से बहुत खुलापन मिला है और ज़रूरत से ज़्यादा जानकारी मिलने के कारण उनमें अहम् की भावना बढ़ गई है। ज़रूरत से ज़्यादा लाड़–प्यार से वह बिगड़ैल होते जा रहे हैं। यह परंपरा धीरे–धीरे आगे बढ़कर पूरे समाज को खोखला कर रही है। ए.सी., मोबाइल, कार, लैपटॉप, वीडियो गेम्स आदि से कम तो आज कोई बात ही नहीं करता। आज सभी को शार्ट कट से सब कुछ चाहिए और यही सीख हम अपने बच्चों को भी दे रहे हैं। माता–पिता उन्हें यह समझ नहीं दे पा रहे कि जीवन में अधिक पैसा हो तो घमंड न करो और संतुलित रूप से पैसे का सदुपयोग करो एवं यदि पैसा कम हो तो भी आपका संतुलन बिगड़ना नहीं चाहिए।

वहीं दूसरी ओर मध्य आय वर्ग के बच्चे भी कुछ कम नहीं, उन्हें भी अपने से ऊपर के लोगों को ही देखने की आदत होती है। उन्हें वह गरीब बच्चे दिखाई नहीं देते जिनके पास खाने तक को कुछ नहीं होता। मॉल जाना, मूवी देखना, ए.सी. में रहना, बंगला, गाड़ी आदि यह सब तो उनके लिए मूलभूत आवश्यकताएं हैं। मेरी मुलाकात प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत एक सज्जन से हुई। बातचीत के दौरान वह सज्जन बोले, 'मेरे घर में हर सदस्य कमा रहा है, परंतु फिर भी पूरा नहीं पड़ता, अभी पीछे ही स्विफ्ट गाड़ी खरीदी है, आज के समय में घर में हर सदस्य को एक गाड़ी की ज़रूरत होती है। आजकल तो यह बेसिक नीड (मूलभूत आवश्यकता) है।'' अब बताइए इन जनाब को कौन समझाए कि हमारी मूलभूत आवश्यकताएं तो रोटी, कपड़ा और मकान है, जिनके बिना जीवन जीना अत्यंत कठिन होता है। गाड़ी आप न भी खरीदें तो भी आपके जीवन में कोई हानि नहीं होने वाली। तो सोचिए! जब एक इज़्ज़तदार व्यक्ति की यह राय है तो क्या वह अपने बच्चों या नाती–पोतों को कम पैसे में खर्च चलाने की सीख दे पाएंगे।

इसी तरह निम्न आय वर्ग के बच्चे उच्च एवं मध्य वर्ग के बच्चों को देखकर ऐशो–आराम की ज़िंदगी बिताने के लिए लालायित रहते हैं। ये बच्चे भी उनसे तुलना करने लगते हैं कि हम क्या किसी से कम हैं ? हम इन बच्चों की तरह क्यों नहीं रह सकते। पैसा कमाने और ऐशो–आराम पाने की ललक में वह कुछ भी करने को तैयार रहते हैं। वहीं जो ऐसा नहीं करते या अपनी समस्याओं से ही जूझते रहते हैं, उन्हें तो दो जून की रोटी भी नसीब नहीं होती जिसके कारण यह बच्चे पौष्टिक भोजन के अभाव में रोगों से घिरे रहते हैं यानि उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं भी पूरी नहीं होतीं।

समाज का कोई भी वर्ग इस ओर ध्यान नहीं दे रहा कि हमारी भावी पीढ़ी किस ओर जा रही है और भविष्य में हम देश को कैसे नागरिक देने जा रहे हैं। जिस देश में एक वर्ग को जीवन की मूलभूत आवश्यकताएं भी नसीब नहीं हैं, उस देश की भावी पीढ़ी को केवल ऐशो–आराम की ज़िंदगी ही दिखाई दे रही है।

इस लेख के माध्यम से मेरे कहने का तात्पर्य है कि हमें अपने बच्चों को बचपन से ही अपनी सामर्थ्य, संस्कृति एवं मूलभूत आवश्यकता के बारे में शिक्षा देनी चाहिए न कि अनाप–शनाप खुश–सुविधाओं का उपयोग करना।

आचार - व्यवहार या दृष्टिकोण ही सब कुछ है

* सुभाष चन्द्र

क्या आपका दृष्टिकोण (नजरिया) ठीक है? चाहे यह कार्य है अथवा निजी जिन्दगी, कामयाब वही है, जो यह जानते हैं कि वे सकारात्मक दृष्टिकोण से प्रत्येक स्थिति का मुकाबला कर सकते हैं। दृष्टिकोण एक ऐसा साधन है जिससे प्रत्येक चीज प्राप्त की जा सकती है। जब आपकी अपने दृष्टिकोण में उत्कृष्टता है तो आपकी जिन्दगी में भी उत्कृष्टता या श्रेष्ठता है।

हार्वर्ड विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अध्ययन में यह पाया गया है कि जब कोई व्यक्ति सफल होता है और ऊँचे मुकाम पर पहुँचता है, तो इसमें 85 प्रतिशत दृष्टिकोण का योगदान है तथा मात्र 15 प्रतिशत हिस्सा इस कारण से है कि वह क्या है अथवा वह क्या जानता है। वस्तुतः लोग कोई वस्तु, सेवाएं, विचार आपसे खरीदने से पहले आपका दृष्टिकोण खरीदते हैं। आपके सम्प्रेषण की गुणवत्ता और प्रभावशीलता आपके दृष्टिकोण को प्रकट करती है। लोगों के लिए आपका दृष्टिकोण आपकी बात से अधिक महत्वपूर्ण है।

यह न केवल भौतिक बाजार की दृष्टि से सत्य है, बल्कि निजी जिंदगी की दृष्टि से भी सत्य है। एक नए भवन निर्माण स्थल पर अलग तीन राजगीरों की एक आश्चर्यजनक कहानी है। आगुन्तक प्रथम राजगीर के पास जाकर पूछता है कि आप क्या कर रहे हैं ? श्रमिक कहता है कि मैं ईंट लगा रहा हूँ। दूसरे राजगीर से पूछता है, वह कहता है कि मैं दीवार बना रहा हूँ। अन्त में आगुन्तक तीसरे राजगीर से वही प्रश्न करता है जो यह कहता है कि मैं बीमार लोगों के लिए अस्पताल बना रहा हूँ ताकि वे यहां आएं और इलाज करा सकें।

अब तीनों जवाबों का मूल्यांकन करें तो हमें तीनों के दृष्टिकोण में स्पष्ट तौर पर अन्तर दिखाई देता है, जिसका निश्चित रूप से उनके काम–काज पर प्रभाव पड़ता है। जैसा हम सोचते हैं, उसी से हम अपने काम–काज को अंजाम देते हैं। स्टेनल जेड ने एक बार कहा था कि "आप चाहे मुरदे की तरह पूरे टूट चुके हों, वे तो सत्य है, परंतु अन्दर से आप उत्साह, खुशी और शक्ति से परिपूर्ण हों"। जिंदगी के सत्य का परिणाम कई बहिरंग तत्वों से निकलेगा, न कि ऐसे तत्वों से जिन पर आप नियंत्रण कर सकते हैं। तथापि आपके व्यवहार, दृष्टिकोण का उन्हीं तरीकों से आभास होता है, जिस तरह आप घटनाओं का मूल्यांकन करते हैं।

अतः हमें ऐसा जीवन बिताना चाहिए कि कल नहीं आएगा। हमें तभी सफलता मिल सकती है, जब हम प्रत्येक क्षेत्र में अपना शत–प्रतिशत योगदान देंगे। जैसे अध्ययन करने, माता–पिता को प्यार करने, अध्यापकों का सम्मान करने तथा ईश्वर की पूजा करने आदि में।

उन्होंने सब पर ऐसा प्रभाव डाला कि हमने सच्चे मन से प्रत्येक दिन सर्वोत्तम कार्य करना शुरू कर दिया।

मैंने जीवन के प्रारम्भ काल में यह सीखा है कि जो व्यक्ति उत्साहित है, उसके अनुयायी भी उत्साही हैं। वस्तुतः बड़े सकारात्मक दृष्टिकोण के लिए उत्साहशीलता एक रस है।

किसी एक विचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाओ।
कु-विचार का त्याग कर केवल उसी विचार के बारे में सोचो।
तुम पाओगे की सफलता तुम्हारे कदम चूम रही है

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

लाल हवेली

गौरा पंत (शिवानी) का जन्म 17 अक्तूबर 1923 को राजकोट, गुजरात में हुआ था 12 वर्ष की अल्पायु में उन्होंने 'नटखट' रचना प्रकाशित कराई। वर्ष 1952 में उनकी कहानी 'मैं मुर्गा हूं' धर्मयुग पत्रिका में छपी और वह गौरा पंत से शिवानी बन गई। हिन्दी साहित्य में उनके योगदान के लिए उन्हें वर्ष 1982 में पद्मश्री की उपाधि से अलंकृत किया गया।

ताहिरा ने पास के बर्थ पर सोए अपने पति को देखा और एक लंबी साँस खींचकर करवट बदल ली। कंबल से ढकी रहमान अली की ऊँची तोंद गाड़ी के झकोलों से रह–रहकर काँप रही थी। अभी तीन घंटे और थे। ताहिरा ने अपनी नाजुक कलाई में बँधी हीरे की जगमगाती घड़ी को कोसा, कमबख्त कितनी देर में घंटी बजा रही थी। रात–भर एक आँख भी नहीं लगी थी उसकी।

पास के बर्थ में उसका पति और नीचे के बर्थ में उसकी बेटी सलमा दोनों नींद में बेखबर बेहोश पड़े थे। ताहिरा घबरा कर बैठ गई। क्यों आ गई थी वह पति के कहने में, सौ बहाने बना सकती थी! जो घाव समय और विस्मृति ने पूरा कर दिया था, उसी पर उसने स्वयं ही नश्तर रख दिया, अब भुगतने के सिवा और चारा ही क्या था!

स्टेशन आ ही गया था। ताहिरा ने काला रेशमी बुर्का खींच लिया। दामी सूटकेस, नए बिस्तरबंद, एयर बैग, चांदी की सुराही उतरवाकर रहमान अली ने हाथ पकड़कर ताहिरा को ऐसे सँभलकर अंदाज से उतारा जैसे वह काँच की गुड़िया हो, तनिक–सा धक्का लगने पर टूटकर बिखर जाएगी। सलमा पहले ही कूदकर उतर चुकी थी।

दूर से भागते, हाँफते हाथ में काली टोपी पकड़े एक नाटे से आदमी ने लपककर रहमान अली को गले से लगाया और गोद में लेकर हवा में उठा लिया। उन दोनों की आँखों से आँसू बह रहे थे। अच्छा तो यही मामू बित्ते हैं। ताहिरा ने मन ही मन सोचा और थे भी बित्ते ही भर के। बिटिया को देखकर मामू ने झट गले से लगा लिया, बिल्कुल इस्मत है, रहमान। वे सलमा का माथा चूम–चूमकर कहे जा रहे थे, वही चेहरा मोहरा, वही नैन–नक्श। इस्मत नहीं रही तो खुदा ने दूसरी इस्मत भेज दी।

ताहिरा पत्थर की–सी मूरत बनी चुप खड़ी थी। उसके दिल पर जो दहकते अंगारे दहक रहे थे उन्हें कौन देख सकता था? वही स्टेशन, वही कनेर का पेड़, पंद्रह साल में इस छोटे से स्टेशन को भी क्या कोई नहीं बदल सका!

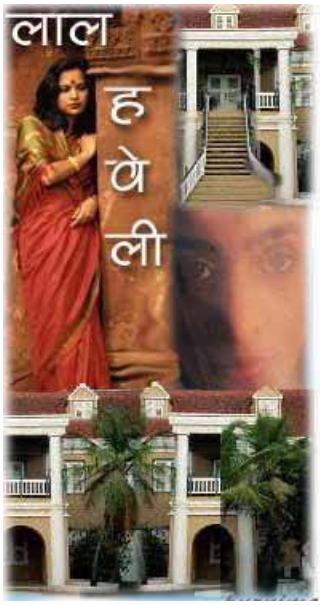

चलो बेटी। मामू बोले, बाहर कार खड़ी है। जिला तो छोटा है, पर अल्ताफ की पहली पोस्टिंग यही हुई। इन्शाअल्ला अब कोई बड़ा शहर मिलेगा।

मामू के इकलौते बेटे अल्ताफ की शादी में रहमान अली पाकिस्तान से आया था, अल्ताफ को पुलिस–कप्तान बनकर भी क्या इसी शहर में आना था। ताहिरा फिर मन–ही–मन कुढ़ी।

घर पहुँचे तो बूढ़ी नानी खुशी से पागल–सी हो गई। बार–बार रहमान अली को गले लगा कर चूमती थीं और सलमा को देखकर ताहिरा को देखना भूल गई, या अल्लाह, यह क्या तेरी कुदरत। इस्मत को ही फिर भेज दिया। दोनों बहुएँ भी बोल उठीं, सच अम्मी जान, बिल्कुल इस्मत आपा हैं पर बहू का मुँह भी तो देखिए। लीजिए ये रही अशरफी। और झट अशरफी थमा कर ननिया सास ने ताहिरा का बुर्का उतार दिया, अल्लाह, चाँद का टुकड़ा है, नन्हीं नजमा देखो सोने का दिया जला धरा है।

ताहिरा ने लज्जा से सिर झुका लिया। पंद्रह साल में वह पहली बार ससुराल आई थी। बड़ी मुश्किल से वीसा मिला था, तीन दिन रहकर फिर पाकिस्तान चली जाएगी, पर कैसे कटेंगे ये तीन दिन?

चलो बहू, उपर के कमरे में चलकर आराम करो। मैं चाय भिजवाती हूँ। कहकर नन्हीं मामी उसे ऊपर पहुँचा

आई। रहमान नीचे ही बैठकर मामू से बातों में लग गया और सलमा को तो बड़ी अम्मी ने गोद में ही खींच लिया। बार–बार उसके माथे पर हाथ फेरतीं, और हिचकियाँ बँध जाती, मेरी इस्मत, मेरी बच्ची।

ताहिरा ने एकांत कमरे में आकर बुर्का फेंक दिया। बन्द खिड़की को खोला तो कलेजा धक हो गया। सामने लाल हवेली खड़ी थी। चटपट खिड़की बंद कर तख्त पर गिरती–पड़ती बैठ गई, खुदाया – तू मुझे क्यों सता रहा हैं? वह मुँह ढाँपकर सिसक उठी। पर क्यों दोष दे वह किसी को। वह तो जान गई थी कि हिन्दुस्तान के जिस शहर में उसे जाना है, वहाँ का एक–एक कंकड़ उस पर पहाड़–सा टूटकर बरसेगा। उसके नेक पति को क्या पता? भोला रहमान अली, जिसकी पवित्र आँखों में ताहिरा के प्रति प्रेम की गंगा छलकती, जिसने उसे पालतू हिरनी–सा बनाकर अपनी बेड़ियों से बाँध लिया था, उस रहमान अली से क्या कहती?

पाकिस्तान के बंटवारे में कितने पिसे, उसी में से एक थी ताहिरा! तब थी वह सोलह वर्ष की कनक छड़ी–सी सुन्दरी सुधा! सुधा अपने मामा के साथ ममेरी बहन के ब्याह में मुल्तान आई। दंगे की ज्वाला ने उसे फूँक दिया। मुस्लिम गुंडों की भीड़ जब भूखे कुत्तों की भाँति उसे बोटी–सी चिचोड़ने को थी, तब ही आ गया फरिश्ता बनकर रहमान अली। नहीं, वे नहीं छोडेंगे, हिंदुओं ने उनकी बहू–बेटियों को छोड़ दिया था क्या? पर रहमान अली की आवाज की मीठी डोर ने उन्हें बाँध लिया। सांवला दुबला–पतला रहमान सहसा कठोर मेघ बनकर उस पर छा गया। सुधा बच गई पर ताहिरा बनकर। रहमान की जवान बीवी को भी देहली में ऐसे ही पीस दिया था, वह जान बचाकर भाग आया था, बुझा और घायल दिल लेकर। सुधा ने बहुत सोचा समझा और रहमान ने भी दलीलें कीं पर पशेमान हो गया। हारकर किसी ने एक–दूसरे पर बीती बिना सुने ही मजबूरियों से समझौता कर लिया। ताहिरा उदास होती तो रहमान अली आसमान से तारे तोड़ लाता, वह हँसती तो वह कुर्बान हो जाता।

एक साल बाद बेटी पैदा हुई तो रहा–सहा मैल भी धुलकर रह गया। अब ताहिरा उसकी बेटी की माँ थी, उसकी किस्मत का बुलन्द सितारा। पहले कराची में छोटी–सी बजाजी की दुकान थी, अब वह सबसे बड़े डिपार्टमेंटल स्टोर का मालिक था। दस–दस सुन्दरी एंग्लो इंडियन छोकरियाँ उसके इशारों पर नाचती, धड़ाधड़ अमरीकी नायलॉन और डेकरॉन बेचतीं। दुबला–पतला रहमान हवा–भरे रबर के खिलौने–सा फूलने लगा। तोंद बढ़ गई। गर्दन ऐंठकर शानदार अकड़ से ऊँची उठ गई, सीना तन गया, आवाज में खुद–ब–खुद एक अमरीकी डौल आ गया।

पर नीलम–पुखराज से जड़ी, हीरे से चमकती–दमकती ताहिरा, शीशम के हाथी दाँत जड़े छपर–खट पर अब भी बेचैन करवटें ही बदलती। मार्च के जाड़े से दामन छुड़वाती हल्की गर्मी की उमस लिए पाकिस्तानी दोपहरिया में पानी से निकली मछली–सी तड़फड़ा उठती। मस्ती–भरे होली के दिन जो अब उसकी पाकिस्तानी ज़िंदगी में कभी नहीं आएँगे गुलाबी मलमल की वह चुनरी उसे अभी भी याद है, अम्मा ने हल्का–सा गोटा टाँक दिया था। हाथ में मोटी–सी पुस्तक लिए उसका तरुण पति कुछ पढ़ रहा था। घुँघराली लटों का गुच्छा चौड़े माथे पर झुक गया था, हाथ की अधजली सिगरेट हाथ में ही बुझ गई थी। गुलाबी चुनरी के गोटे की चमक देखते ही उसने और भी सिर झुका दिया था, चुलबुली सुन्दरी बालिका नववधू से झेंप–झेंपकर रह जाता था, बेचारा। पीछे से चुपचाप आ कर सुधा ने दोनों गालों पर अबीर मल दिया था और झट चौके में घुसकर अम्मा के साथ गुझिया बनाने में जुट गई थी। वहीं से सास की नजर बचाकर भोली चितवन से पति की ओर देख चट से छोटी–सी गुलाबी जीभ निकालकर चिढ़ा भी दिया था, उसने। जब वह मुल्तान जाने को हुई तो कितना कहा था उन्होंने, सुधा मुल्तान मत जाओ। पर वह क्या जानती थी कि दुर्भाग्य का मेघ उस पर मंडरा रहा है? स्टेशन पर छोड़ने आए थे, इसी स्टेशन पर। यही कनेर का पेड़ था, यही जंगला। मामाजी के साथ गठरी–सी बनी सुधा को घूँघट उठाने का अवकाश नहीं मिला। गाड़ी चली तो साहस कर उसने घूंघट जरा–सा खिसकाकर अंतिम बार उन्हें देखा था। वही अमृत की अंतिम घूँट थी।

सुधा तो मर गई थी, अब ताहिरा थी। उसने फिर काँपते हाथों से खिड़की खोली, वही लाल हवेली थी उसके श्वसुर वकील साहब की। वही छत पर चढ़ी रात की रानी की बेल, तीसरा कमरा जहाँ उसके जीवन की कितनी

रस–भरी रातें बीती थीं, न जाने क्या कर रहे होंगे, शादी कर ली होगी, क्या पता बच्चों से खेल रहें हों! आँखे फिर बरसने लगीं और एक अनजाने मोह से वह जूझ उठी।

'ताहिरा, अरे कहाँ हो?' रहमान अली का स्वर आया और हडबड़ाकर आँखे पोंछ ताहिरा बिस्तरबंद खोलने लगी। रहमान अली ने गीली आँखे देखीं तो घुटना टेक कर उसके पास बैठ गया, 'बीवी, क्या बात हो गई? सिर तो नहीं दुख रहा है। चलो–चलो, लेटो चलकर। कितनी बार समझाया है कि यह सब काम मत किया करो, पर सुनता कौन है! बैठो कुर्सी पर, मैं बिस्तर खोलता हूँ।' मखमली गद्दे पर रेशमी चादर बिछाकर रहमान अली ने ताहिरा को लिटा दिया और शरबत लेने चला गया। सलमा आकर सिर दबाने लगी, बड़ी अम्मा ने आकर कहा, 'नजर लग गई है, और क्या।' नहीं नजमा ने दहकते अंगारों पर चून और मिर्च से नजर उतारी। किसी ने कहा, 'दिल का दौरा पड़ गया, आंवले का मुरब्बा चटाकर देखो।'

लाड और दुलार की थपकियाँ देकर सब चले गए। पास में लेटा रहमान अली खर्राटे भरने लगा। तो दबे पैरों वह फिर खिड़की पर जा खड़ी हुई। बहुत दिन से प्यासे को जैसे ठंडे पानी की झील मिल गई थी, पानी पी–पीकर भी प्यास नहीं बुझ रही थी। तीसरी मंज़िल पर रोशनी जल रही थी। उस घर में रात का खाना देर से ही निबटता था। फिर खाने के बाद दूध पीने की भी तो उन्हें आदत थी। इतने साल गुजर गए, फिर भी उनकी एक–एक आदत उसे दो के पहाड़े की तरह जुबानी याद थी। सुधा, सुधा कहाँ है तू? उसका हृदय उसे स्वयं धिक्कार उठा, तूने अपना गला क्यों नहीं घोंट दिया? तू मर क्यों नहीं गई, कुएँ में कूदकर? क्या पाकिस्तान के कुएँ सूख गए थे? तूने धर्म छोड़ा पर संस्कार रह गए, प्रेम की धारा मोड़ दी, पर बेड़ी नहीं कटी, हर तीज, होली, दीवाली तेरे कलेजे पर भाला भोंककर निकल जाती है। हर ईद तुझे खुशी से क्यों नहीं भर देती? आज सामने तेरे ससुराल की हवेली है, जा उनके चरणों में गिरकर अपने पाप धो ले। ताहिरा ने सिसकियाँ रोकने को दुपट्टा मुँह में दबा लिया।

रहमान अली ने करवट बदली और पलंग चरमराया। दबे पैर रखती ताहिरा फिर लेट गई। सुबह उठी तो शहनाइयाँ बज रही थीं, रेशमी रंग–बिरंगी गरारा–कमीज अबरखी चमकते दुपट्टे, हिना और मोतिया की चमक से पूरा घर महक रहा था। पुलिस बैंड तैयार था, खाकी वर्दियाँ और लाल तुर्रम के साफे सूरज की किरनों से चमक रहे थे। बारात में घर की सब औरतें भी जाएँगी। एक बस में रेशमी चादर तानकर पर्दा खींच दिया गया था। लड़कियाँ बड़ी–बड़ी सुर्मेदार आंखों से नशा–सा बिखेरती एक दुसरे पर गिरती–पड़ती बस पर चढ़ रही थीं। बड़ी–बुढ़ियाँ पानदान समेटकर बड़े इत्मीनान से बैठने जा रही थीं और पीछे–पीछे ताहिरा काला बुर्का ओढ़कर ऐसी गुमसुम चली जा रही थी जैसे सुध–बुध खो बैठी हो। ऐसी ही एक सांझ को वह भी दुल्हन बनकर इसी शहर आई थी, बस में सिमटी–सिमटाई लाल चुनर से ढ़की। आज था स्याह बुर्का, जिसने उसका चेहरा ही नहीं, पूरी पिछली जिन्दगी अंधेरे में डुबाकर रख दी थी।

अरे किसी ने वकील साहब के यहां बुलौआ भेजा या नहीं?'

बड़ी अम्मी बोलीं ओर ताहिरा के दिल पर नश्तर फिरा।

'दे दिया अम्मी। मामूजान बोले, उनकी तबीयत ठीक नहीं है, इसी से नहीं आए।'

'बड़े नेक आदमी हैं' बड़ी अम्मी ने डिबिया खोलकर पान मुंह में भरा,

फिर छाली की चुटकी निकाली और बोली, शहर के सबसे नामी वकील के बेटे हैं पर आस न औलाद। सुना एक बीवी दंगे में मर गई तो फिर घर ही नहीं बसाया।'

बड़ी धूमधाम से ब्याह हुआ, चांद–सी दुल्हन आई। शाम को पिक्चर का प्रोग्राम बना। नया जोड़ा, बड़ी अम्मी, लड़कियाँ, यहाँ तक कि घर की नौकरानियाँ भी बन–ठनकर तैयार हो गई। पर ताहिरा नहीं गई, उसका सिर दुख रहा था। बेसिर–पैर के मुहब्बत के गाने सुनने की ताकत उसमें नहीं थी। अकेले अंधेरे कमरे में वह चुपचाप पड़ी रहना चाहती थी–हिन्दुस्तान, प्यारे हिन्दुस्तान की आखिरी साँझ।

जब सब चले गए तो तेज बत्ती जलाकर वह आदमकद आईने के सामने खड़ी हो गई। समय और भाग्य का अत्याचार भी उसका अलौकिक सौंदर्य नहीं लूट सका। वह बड़ी–बड़ी आँखें, गोरा रंग और संगमरमर–सी सफेद देह – कौन कहेगा वह एक जवान बेटी की माँ है? कहीं पर भी

उसके पुष्ट यौवन ने समय से मुँह की नहीं खाई थी। कल वह सुबह चार बजे चली जाएगी। जिस देवता ने उसके लिए सर्वस्व त्याग कर वैरागी का वेश धर लिया है, क्या एक बार भी उसके दर्शन नहीं मिलेंगे? किसी शैतान–नटखट बालक की भाँति उसकी आँखे चमकने लगीं।

झटपट बुर्का ओढ़, वह बाहर निकल आई, पैरों में बिजली की गति आ गई, पर हवेली के पास आकर वह पसीना–पसीना हो गई। पिछवाड़े की सीढ़ियाँ उसे याद थीं जो ठीक उनके कमरे की छोटी खिड़की के पास आकर ही रुकती थीं। एक–एक पैर दस मन का हो गया, कलेजा फट–फट कर मुंह को आ गया, पर अब वह ताहिरा नहीं थी, वह सोलह वर्ष पूर्व की चंचल बालिका नववधू सुधा थी जो सास की नजर बचाकर तरुण पति के गालों पर अबीर मलने जा रही थी। मिलन के उन अमूल्य क्षणों में सैयद वंश के रहमान अली का अस्तित्व मिट गया था। आखिरी सीढ़ी आई, सांस रोककर, आँखे मूँद वह मनाने लगी, हे बिल्वेश्वर महादेव, तुम्हारे चरणों में यह हीरे की अँगूठी चढ़ाऊँगी, एक बार उन्हें दिखा दो पर वे मुझे न देखें।'

बहुत दिन बाद भक्त भगवान का स्मरण किया था, कैसे न सुनते? आँसुओं से अंधी ने देवता को देख लिया। वही गंभीर मुद्रा, वही लट्ठे का इकबर्रा पाजामा और मलमल का कुर्ता। मेज पर अभागिन सुधा की तस्वीर थी जो गौने पर बड़े भय्या ने खींची थी।

'जी भरकर देख पगली और भाग जा, भाग ताहिरा, भाग!' उसके कानों में जैसे स्वयं भोलानाथ गरजे।

सुधा फिर डूब गई, ताहिरा जगी। सब सिनेमा से लौटने को होंगे। अंतिम बार आँखों ही आँखों में देवता की चरण–धूलि लेकर वह लौटी और बिल्वेश्वर महादेव के निर्जन देवालय की ओर भागी। न जाने कितनी मनौतियाँ माँगी थीं, इसी देहरी पर। सिर पटककर वह लौट गई, आँचल पसारकर उसने आखिरी मनौती माँगी, श्हे भोलेनाथ, उन्हें सुखी रखना। उनके पैरों में काँटा भी न गड़े। हीरे की अँगूठी उतारकर चढ़ा दी और भागती–हाँफती घर पहुँची।

रहमान अली ने आते ही उसका पीला चेहरा देखा तो नब्ज पकड़ ली, देखूँ, बुखार तो नहीं है, अरे अँगूठी कहाँ गई?' वह अँगूठी रहमान ने उसे इसी साल शादी के दिन यादगार में पहनाई थी।

'न जाने कहाँ गिर गई? थके स्वर में ताहिरा ने कहा।

'कोई बात नही रहमान ने झुककर ठंडी बर्फ़–सी लंबी अँगुलियों को चूमकर कहा, ये अँगुलियाँ आबाद रहें। इन्शाअल्ला अब के तेहरान से चौकोर हीरा मँगवा लेंगे।'

ताहिरा की खोई दृष्टि खिड़की से बाहर अंधेरे में डूबती लाल हवेली पर थी, जिसके तीसरे कमरे की रोशनी दप–से–बुझ गई थी। ताहिरा ने एक सर्द साँस खींचकर खिड़की बन्द कर दी।

लाल हवेली अंधेरे में गले तक डूब चुकी थी।

जीवन में विचार का महत्व

*** राम अवतार प्रसाद**

जीवन में एक सद–विचार जीवन को सम्पूर्ण रीति से बदल सकता है, जीवन का आनन्द आपके विचारों पर आधारित है। आपका जैसा विचार होगा उसी के अनुसार ही आपका भाग्य एवं परिस्थिति का निर्माण होगा। जिस प्रकार आप अपने पहनने वाले वस्त्रों तथा अन्य पसन्द वाली वस्तुओं को संभाल कर रखते हो उसी प्रकार अपने विचारों को भी संभाल कर रखना होगा। आपके विचारों की पसन्दगी आपके जीवन शैली को निर्धारित करती है।

इसके लिए, यदि देखें तो, स्टार बक्स कॉफी के चेयरमैन श्री हावर्ड शूज के अनुसार – जो सफलता आपको मिली है, वह सूप की रेसिपी नहीं है, उसके लिए कठोर परिश्रम एवं सतत सकारात्मक (पोजिटिव) विचारों की आवश्यकता होती है। 75% सफलता आपको विचारों से मिलती है और बाकी बचा कार्य विचारों के बल से हो जाता है। इसलिए, पोजिटिव रहें – अर्थात सकारात्मक रहो–

जो तुम चाहो, वो दुनिया की रीत होगी।
पूरी दुनिया तुम्हारी मनमीत होगी।

दस्तूर एक ही होता है जज्बे का।
मान लो तो हार और ठान लो तो जीत।।

*वेअरहाउस प्रबंधक, सै.वे. मालिया हटीना, जूनागढ़ (गुजरात)

अनुवाद : एक सृजनात्मक कला

* राकेश सिंह परस्ते

अंग्रेजी के महान कवि James Kirkup (जेम्स किरकप) ने अपनी कविता "No Men Are Foreign" में बिल्कुल सही कहा है कि कोई भी व्यक्ति विदेशी नहीं है हम सभी पूरे विश्व के लोग एक हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मानवता की दृष्टि से सभी देशों–प्रदेशों के मनुष्य मूलतः एक हैं पर भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और भाषिक सीमाएं हमें एक दूसरे से अलग कर देती हैं। इनमें भाषा की सीमा सबसे बड़ी सीमा है। विदेशों की बात तो दूर अपने ही देश में विभिन्न प्रदेशों के लोग एक–दूसरे की भाषा न समझने के कारण एक–दूसरे से अजनवी हो जाते हैं । मानव–मन स्वभावतः सीमाओं में बंधकर रुद्ध नहीं होना चाहता, बल्कि वह इन सीमाओं को लांघकर विश्व–भर में व्यापने के लिए तड़पता रहता है। भाषा की सीमाओं को लांघने का सबसे बड़ा माध्यम अनुवाद है। भाषा के अविष्कार के बाद जब मनुष्य–समाज का विकास–विस्तार होता चला गया और संपर्कों एवं आदान–प्रदान की प्रक्रिया को अधिक फ़ैलाने की आवश्यकता की जाने लगी, तो अनुवाद ने जन्म लिया।

'अनुवाद' मूलतः संस्कृत का शब्द है। संस्कृत के 'वद्' धातु से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ है। 'वद्' का अर्थ है बोलना। 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका अर्थ है–'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'। 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है, प्राप्त कथन को पुनरू कहना। इसका प्रयोग पहली बार मोनियर विलियम्स ने अंग्रेजी शब्द ट्रांसलेशन (Translation) के पर्याय के रूप में किया। इसके बाद ही 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री को दूसरी भाषा में पुनः प्रस्तुति के सन्दर्भ में किया गया।

आधुनिक युग के जिस चरण में आज हम हैं, उसे वैश्विकरण का युग, सूचना प्राद्योगिकी का युग, उत्तर आधुनिक युग आदि कहा जा रहा है। इन विविध नामों की सार्थकता अनुवाद के बिना सिद्ध नहीं हो सकती। अतः इसी क्रम में यदि इस युग को vuqokn dk ;qx कहा जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। विश्व भर में फैले अपार ज्ञान संपदा का प्रचार–प्रसार करने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। भारतीय दर्शन, गणित, चिकित्सा आदि शास्त्रों का ज्ञान विश्व के अनेक देशों में विशेषकर पश्चिमी देशों में तथा वहाँ पर हुए आधुनिक आविष्कारों की जानकारी भारतीयों को होना अनुवाद के कारण ही संभव हो पाया है। हम सभी जानते हैं कि गुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर ने अपनी पुस्तक ^xhrkatfy* को मूलतः बंगाली भाषा में लिखा था और उन्होंने स्वयं अंग्रेजी भाषा में इसका अनुवाद किया और इसी पुस्तक के लिए उन्हें साहित्य के क्षेत्र में सन् 1913 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह सिर्फ अनुवाद के द्वारा ही संभव हो सका।

अनुवाद दो भिन्न भाषा–भाषियों के बीच विचारों के आदान–प्रदान का एक सशक्त माध्यम है। इसकी सहायता से दो भिन्न सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में प्रयुक्त होने वाली भाषाओं के बीच एक संबंध स्थापित किया जाता है। इस कार्य में अनुवादक को एक कलाकार या रचनाकार की भांति सृजन की प्रक्रिया से गुजरना होता है। वह यह सृजनकार्य, मूल पाठ के लेखक की भांति ही करता है। वह मूल के आधार पर लक्ष्य भाषा में अपनी लेखन प्रतिभा का उपयोग कर पहले से सृजित पाठ का पुनःसृजन करता है। पुनःसृजन करते समय अनुवादक अनुवाद की वैज्ञानिक प्रक्रिया तथा भाषा सिद्धांतों का अनुपालन करता है। इसलिए अनुवाद को वैज्ञानिक कला भी कहा जाता है।

*हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

अनुवादकर्म में रत अध्यवसायी अनुवादकों का मत है कि अनुवाद दूसरे दर्जे का लेखन नहीं, अपितु मूल के बराबर का ही सृजनधर्मी प्रयास है। इस सन्दर्भ में M,- johUæukFk JhokLro के द्वारा दी गई परिभाषा उल्लेखनीय है –"एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ सामग्री में अन्तर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धांत के आधार पर दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में संगठनात्मक रुपांतरण अथवा सृजनात्मक पुनर्गठन ही अनुवाद है।" अनुवाद एक तरह से पुनःसृजन ही है और साहित्यिक अनुवाद में अनुवाद को स्वीकार्य, पठनीय बनाने के लिए हल्का–सा फेरबदल करना ही पड़ता है।

जैसे अंग्रेजी का एक वाक्य है :– Small leaves are falling from the tree.

हिन्दी में इस वाक्य का अनुवाद इस तरह से हो सकता है:

1) छोटे पत्ते पेड़ (वृक्ष) से गिर रहे हैं।
2) नन्हीं पत्तियाँ वृक्ष से गिर रही हैं।
3½ uUgh&uUgh ifÙk;k o{k l fxj jgh gA

इन तीनों वाक्यों में पहला शब्दानुवाद, दूसरा भाव, साहित्यिक अनुवाद तथा तीसरा सृजनात्मक अनुवाद कहलाएगा। उक्त अनुवादों के विभिन्न रूपों में से तीसरा रूप अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर व सजीव बन पड़ा है। 'छोटे' व 'नन्हीं' की पुनरुक्ति ने अनुवाद के सौन्दर्य को निश्चित रूप से बढ़ा दिया है। मूलपाठ में यद्यपि इन दो शब्दों की पुनरावृत्ति नहीं थी, क्योंकि अंग्रेजी भाषा की यह प्रकृति नहीं है, लेकिन हिन्दी–अनुवाद में अतिरिक्त शब्द जोड़ने से अनुवाद में कलात्मकता के साथ–साथ स्वभाविकता खूब आ गई है।

अनुवादक जब तक मूल रचना की अनुभूति, आशय और अभिव्यक्ति के साथ सरोकार नहीं हो जाता तब तक सुन्दर एवं पठनीय अनुवाद की सृष्टि नहीं हो पाती। इसलिए अनुवादक में सृजनशील प्रतिभा का होना अनिवार्य है। मूल रचनाकार की तरह अनुवादक भी कथ्य को आत्मसात करता है, और उसे अपनी मनोवृत्तियों में उतारकर पुनः सृजित करने का प्रयास करता है तथा अपने अभिव्यक्ति–माध्यम के उत्कृष्ट उपादनों द्वारा उसको एक नया रूप देता है । इस पूरे कार्य को करने के लिए किसी भी अनुवादक को पाँच चरणों से गुजरना पढ़ता है। वे चरण हैं– (1) पाठ–पठन (2) विश्लेषण (3) भाषांतरण (4) समायोजन तथा (5) पुनःरीक्षण/तुलना।

उपर्युक्त पाँच चरणों से गुजरकर अनुवाद को सभी प्रकार से अच्छा अनुवाद बनाने का प्रयास किया जाता है। जब अनुवाद अनुवाद न लगकर मौलिक रचना लगता है तो उसे अच्छा, उत्तम अनुवाद कहा जाता है। एक अच्छा अनुवादक अपनी अनूदित कृति को सभी प्रकार से मौलिक रूप प्रदान करने का प्रयास करता है।

भाषाओं में कुछ शब्द सामाजिक परिवेश, सांस्कृतिक संदर्भ तथा सांस्कारिक अनुष्ठानों से संबंधित होते हैं। भाषाओं में मुहावरों और लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया जाता है। ये भी किसी भाषा के लोक सांस्कृतिक पहलुओं को उजागर करते हैं। जैसे –

egkojs	ykdksfä;k
1) आँख का तारा होना। To be an apple of one's eye.	1) जो गरजते हैं, वे बरसते नहीं। Barking dogs seldom bite.
2) नौ दो ग्यारह होना, To make good ones escape.	2) नाच न जाने आँगन टेढ़ा। A bad workman quarrels with his tools.

इन उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि दोनों भाषाओं के मुहावरों और लोकोक्तियों के शाब्दिक अर्थ में अंतर है लेकिन भावार्थ की निकटता है।

भाषाओं में कलात्मक और असरदार अभिव्यक्ति के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों के साथ–साथ 'सादृश्य' का भी प्रयोग किया जाता है। इससे अभिव्यक्ति में अधिक कलात्मकता और बिंबात्मकता उत्पन्न हो जाती है। उदाहरण के लिए– अंग्रेजी में कहते हैं – 'as black as jet' इस के लिए हिंदी में 'जेट जैसा काला', 'जेट काला', 'बहुत काला कहने से वह प्रभाव उत्पन्न नहीं होता जो मूल से होता है। इसके समान हिंदी में 'dk;y tlk dkyk^ या 'dk, tlk dkyk^ का प्रयोग अधिक उपयुक्त होगा।

इस प्रकार से हमें अनुवाद करते समय स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा पर अधिकार होने के साथ–साथ दोनों भाषाओँ की प्रकृति एवं सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा परिवेश और मुहावरों व लोकोक्तियों का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिए। हमें मूल पाठ के प्रति निष्ठा, अनुवाद की सटीकता, भाषा की शुद्धता और शैली के सौन्दर्य को बनाए रखने के साथ–साथ अनुवाद के प्रयोजन और अपने लक्षित पाठक के स्तर का ध्यान भी रखना चाहिए। अनुवाद की भाषा सहज और प्रवाहशील होनी चाहिए ताकि पाठक अटके नहीं और उसे अनुवाद को समझने के लिए मूल पाठ को देखने की आवश्यकता महसूस न हो।

अंततः कहा जा सकता है कि अनुवाद का कार्य एक भाषा की आत्मा (अर्थ) को दूसरी भाषा की काया में प्रवेश करने के समान है। अनुवाद एक सांस्कृतिक सेतु है। इसलिए भाषा भिन्नता के साथ ही भाषा विशेष की सामाजिक, सांस्कृतिक और शैलीगत विशेषताओं को समझना अनिवार्य होता है। इस प्रकार से अनुवाद द्वितीय श्रेणी का लेखन ही नहीं, बल्कि मूल के बराबर का एक सृजनात्मक प्रयास है। इस दृष्टि से मौलिक सृजन और अनुवाद की प्रक्रिया प्रायः एक समान है। दोनों के भीतर अनुभूति पक्ष की सघनता रहती है। इसी कारण अनुवादक को भी एक सृजक ही माना गया है और उसकी कला को सृजनात्मक कला।

जिन्दगी और मौत की सच्चाई

*** बलवान सिंह**

जब हम जिन्दा थे तो किसी ने पास भी बिठाया नहीं
अब खुद मेरे चारों और बैठे जा रहे हैं।

पहले किसी ने मेरा हाल नहीं पूछा
अब सभी आंसू बहाऐ जा रहे हैं

एक रूमाल भी भेंट नहीं किया जब हम जिन्दा थे
अब शाल और चादर ऊपर से ओढ़ाएं जा रहे हैं।

सब को पता है शाल चादर किसी काम के नहीं हैं
मगर फिर भी बेचारे दुनियादारी निभाएं जा रहे हैं।

कभी किसी ने वक्त का खाना मन से खिलाया तक नहीं
अब देशी घी मेरे मुँह में डाले जा रहे हैं।

जिन्दगी में एक भी कदम साथ नहीं चल सका कोई
अब फूलों से सजा कर कन्धे पर उठाकर ले जा रहे हैं।

अब पता चला की मौत जिन्दगी से बेहतर है
हम तो बेवजह जिन्दगी की चाहत किए जा रहे हैं।

जिन्दगी धूप-छाँव

*** वीना दुग्गल**

रे मन तू क्यों घबराता है
सुख–दुःख तो आता–जाता है
सागर में गहरे उतरे बिन
कोई रत्न कहाँ पाता है

मुदद्त तक धरती जलती है
तब जाकर बदरा बरसती है
प्यासे चातक के नैना
कब से बारिश को तरसे हैं

जब–जब तपती धूप ढली है
छाया उनसे आन मिली है
काँटों के आगोश में देखो
कितनी सुन्दर कली खिली है

बेशक गम की रात
गहरी और घनी है
पर अंधेरों से कहाँ
हिम्मत डरी है

चीर कर फिर से
अंधेरे की छाती को
संग सूरज को लिए
सुबह खड़ी है

*कनिष्ठ अधीक्षक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

*निजी सचिव, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

हंसी है जहाँ, स्वास्थ्य है वहाँ

*महिमानन्द भट्ट

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहकर उसका विनोदप्रिय होना जरूरी ही नहीं बल्कि आवश्यक भी है। हास्य–परिहास में तत्पर व्यक्ति समाज को आपस में जोड़ने में सहायक होते हैं और शीघ्र ही लोगों में घुलमिल जाते हैं और सबको प्रिय लगते हैं। यह भी सत्य है कि glh eu"; dk b'oj dk fn;k lcls cgeY; migkj g और जो हंसते नहीं समझिए वे ईश्वर के इस उपहार से वंचित रह जाते हैं। विचारक एडीसन का भी कथन है कि मनुष्य को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह इतना बुद्धिमान न हो जाए कि वह हँसी जैसी महान खुशी से अलग रहने लगे।

मानव जीवन में हास्य का अद्वितीय स्थान है। मेरी नजर में यह जीवंतता की ज्योति है। दुनिया में दुःख–दर्द बहुत हैं और हर एक व्यक्ति अपनी–अपनी व्यथा को गाने और सुनाने लगता है यद्यपि इससे कुछ हाथ नहीं लगता बस केवल मन का बोझ हल्का होता है किंतु दूसरों के दुःख–दर्द को बांटते हुए यदि एक खुशनुमा माहौल बना दिया जाए तो इसे अपने–आप में एक महान कला ही कहा जा सकता है।

आज के मशीनवादी युग में जहां हर व्यक्ति किसी न किसी कारण से त्रस्त और व्यस्त है वहां हास्य द्वारा ही परम सुख का आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। हास्य रस पर पहले भी बहुत कुछ लिखा जा चुका है और आज भी लिखा जा रहा है लेकिन इसे पढ़ने का समय किसके पास है। कहने का तात्पर्य है कि बातचीत में ही हास्य विनोद का पूरा आनन्द आसानी से लिया जा सकता है। हम कवि सम्मेलनों में हास्य कविताओं को सुनते हैं या टी.वी पर हास्य के नाटक आदि देखते हैं। ये हास्य कार्यक्रम एक थके और व्यथित व्यक्ति को तरोताजा करके पुनः अधिक उत्साह से काम करने को प्रेरित करता है। इसमें कोई शक नहीं है कि हास्य एक टॉनिक है और वह हृदय से होकर मन को छूता है। हास्य को आधार बनाकर जो कुछ भी लिखा गया है वह सदैव जीवन के लिए एक प्रेरणास्त्रोत रहा है। किसी शायर ने ठीक ही कहा है –

^, xe ftnxh] ukjkt u gk]
e>dk vknr g eLdjku dhA^

इसी प्रकार फिल्मी गानों में भी eu glu dk oknk fd;k Fkk dHkh] blfy, lnk eLdjkrk g जैसे गानों को सुनकर मन में छाई उदासी को प्रसन्नता में बदलकर आनन्द की अनुभूति प्राप्त की जा सकती है। हास्य विनोदी होना भी निजी गुणों में आता है क्योंकि मुस्कुराता हुआ चेहरा सभी को अच्छा लगता है। एक दुकानदार की पहली शर्त यह होनी चाहिए कि वह अपने ग्राहक से मुस्कुराकर बात करे। 'सेल्सगर्ल' नर्स और एअर होस्टेज को तो हंसना–मुस्कुराना उनकी ड्यूटी का एक आवश्यक अंग माना जाता है। जो डाक्टर अपने मरीज से मुस्कुराकर बात करते हैं यह देखा गया है कि उनके मरीज जल्दी स्वस्थ होने लगते हैं क्योंकि डाक्टर की मुस्कुराहट मरीज के भीतर आत्मविश्वास बढ़ाती है। अध्यापक की लोकप्रियता का राज भी यही होता है कि वह अपने विद्यार्थियों से मुस्कुराकर बात करें।

हास्य मनुष्य को ईश्वर का दिया गया सबसे बहुमूल्य उपहार है और जो हंसते नहीं वे ईश्वर के इस अमूल्य उपहार से वंचित रह जाते हैं। हास्य को हम एक स्वास्थ्यवर्धक योगाभ्यास भी कह सकते हैं क्योंकि यह पूरे शरीर में उत्साह और नवीन आशा का संचार पैदा करता है। किसी दार्शनिक की उक्ति है कि जो हंस नहीं सकता, हंसा नहीं सकता, वह शुद्ध हदय का व्यक्ति नहीं हो सकता और उस पर भरोसा भी नहीं किया जा सकता। अतः जो व्यक्ति हंसमुख नहीं है उससे दूरी रखना ही हितकर है।

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

ऐसा कहा जाता है कि दुनियां में कुछ भी असंभव नहीं लेकिन यह मानना होगा कि हंसना या हंसाना असंभव नहीं लेकिन कठिन अवश्य है।

मुस्कुराहट में असीम शक्ति है। शब्द व्यक्ति को उलझा सकते हैं, पर मुस्कराहट हमेशा काम कर जाती है। कहा जाता है कि जिस प्रकार सूर्य रोशनी, यानी घूप वनस्पतियों के लिए लाभप्रद है, उसी प्रकार मुस्कुराहट व्यक्ति के लिए अत्यन्त जरूरी है। घर सुख और आनंद की चाबी घरवालों की मुस्कुराहट में छिपी होती है। हंसी के लिए अच्छा खासा माहौल होना जरूरी है। यदि आपको कम हंसी आती है तो इन बातों पर ध्यान दीजिए। शायद आप अपनी हंसी में निखार ला सकें। यदि आप लिखने, पढ़ने के शौकीन हैं तो हास्य गीत, कथाएं, एकांकी, व्यंग्य लेख और व्यंग्य चित्र आदि की ओर अपना ध्यान लगा सकते हैं। यदि कवि–सम्मेलनों में रुचि लेते हों तो हास्य कवि सम्मेलनों का आनन्द उठाइए। आप शरद जोशी, हरिशंकर परसाई, के.पी.सक्सेना, सुरेन्द्र शर्मा, अशोक चक्रधर आदि हास्य कवियों की हास्य रचनाएं भी पढ़ सकते हैं। समाचार–पत्र पढ़ने के शौकीनों के लिए विभिन्न कार्टूनिस्टों के हास्य कार्टून देखे और पढ़े जा सकते हैं। इसके अलावा जीवन की विसंगतियों पर मीठे–मीठे व्यंग्य और दैनिक वातावरण पर गुदगुदाने वाले लतीफे भी आपको विभिन्न समाचार–पत्रों में 'रंग और व्यंग्य' 'झूठे–लतीफे' दो इंच मुस्कान' 'पढ़ो और हंसो,हंसिकाएं आदि शीर्षकों से पढ़ने को मिल जाएंगे। यदि आप फिल्म देखने के शौकीन हों तो कामेडियन फिल्मों को देख सकते हैं क्योंकि इस प्रकार की फिल्मों में कलाकारों द्वारा हंसने–हंसाने की कला कूट–कूट कर भरी होती है और उन्हें देखते ही चेहरे पर मुस्कान आना स्वाभाविक है। आजकल तो टी.वी के विभिन्न चैनलों पर भी कामेडियन सीरियलों की भरमार देखने को मिलती है जिन्हें काफी पसंद किया जाता है।

यह याद रखना होगा कि हंसी का मंच भले ही चेहरा हो लेकिन उसका रिहर्सल–रूम मन होता है। हास्य रूपी ईश्वरीय उपहार का अपने जीवन में भरपूर आनन्द उठाने के लिए सदैव विनोदप्रिय होना आज की आवश्यकता है। जीवन को रसमय बनाने के लिए हास्य रूपी धरोहर को संजोकर रखना सबके लिए हितकर है। डाक्टर भी यह बात मानते हैं कि हंसना–मुस्कुराना सेहत के लिए बहुत फायदेमंद होता है। हंसने वालों के चेहरे पर बुढ़ापा देर से आता है और हंसने–मुस्कुराने की कोई उम्र भी नहीं होती। हंसने के कारण मांसपेशियों की लगातार कसरत होती है और चेहरे का रक्त संचार तेज होता है। डाक्टरों का कहना है कि हंसने से फेफड़े के रोग नहीं हो सकते। इससे श्वास की क्रिया तेज रहती है और दुषित वायु कार्बनडाइआक्साइड बाहर निकलती है। खुलकर हंसने से रक्त संचार की गति तो बढ़ती ही है साथ ही पाचन तंत्र भी ठीक रहता है और मस्तिष्क का तनाव भी कम होता है। इसके विपरित जो लोग हंसते नहीं हैं या कम हंसते हैं उनके चेहरे पर किसी प्रकार की आभा नहीं होती और वे गुस्सैल प्रकृति के नजर आते हैं। कुछ लोगों को यह गलतफहमी भी होती है कि यदि वे सभ्य समाज में ज्यादा हंसेंगे तो उनका बौद्धिक स्तर कम हो जाएगा। ऐसे लोग जब मुस्कुराते हैं तो उनके चेहरे पर किसी पीड़ा के होने का–सा भाव दिखाई देता है।

निःसंकोच हास्य को मानव जीवन की अमृतधारा कहा जा सकता है। गांधी जी कहा है कि glh eu dh xkB [kky nrh g] ej eu dh Hkh vkj rEgkj eu dh Hkh अर्थात् खुलकर हंसने से रक्त संचार की गति भी बढ़ती है और पाचन–तंत्र भी मजबूत होता है। हास्य में सच्चाई का विशेष स्थान है क्योंकि मिलावटी हास्य जीवन की यथार्थता से काफी दूर होता है। हास्य सच के जितने करीब होता है उतना ही सुन्दर होता है अर्थात् दिल की गहराई से निकला हास्य सामने वाले को भी खिलखिलाने के लिए मजबूत कर देता है।

अतः यदि कोई सज्जन आज तक न हंसने की कसम खाकर बैठे हों तो उन्हें मेरी यही सलाह है कि आईना उठाइए और देखिए कि आपके चेहरे पर हंसी कैसी लगती है। सदा प्रसन्नचित्त और हंसमुख बनने का प्रयत्न करें। ईश्वर के इस बहुमूल्य उपहार का अपने जीवन में पूरा–पूरा मजा लीजिए फिर देखिए आपका जीवन कितना रसमय हो जाता है। अब बताइए कि अब भी आप हंसेंगे की नहीं। t:j gfl,] D;kfd ge'kk ;kn j[k– ^glh g tgk] LokLF; g ogk*A

मिलना और बिछुड़ना

*मीनाक्षी गंभीर

कभी जब मैं यूँ ही तन्हा बैठती हूँ और अचानक पुरानी यादों की बारिशें बूँद बन कर टप–टप बरसती हैं तो मेरे ज़हन में बेतरतीब से ख्याल आने लगते हैं और मेरी कलम कागज़ पर लफ्ज़ उकेरने को मचलने लगती है।

जिन्दगी क्या है? जिन्दगी ऐसी क्यों है? जिंदगी आखिर चाहती क्या है? खाली मुट्ठी में आसमां को बंद करने की चाहत जहाँ हमें हर हद को पार करने की ताकत देती है, वहीं जब मुट्ठी भर जाए तो फिर रेत की तरह फिसलते वक्त को पकड़ने की छटपटाहट भी चैन नहीं लेने देती है और फिर हम भागते हैं, भागते ही जाते हैं, बिना ये देखे कि इस दौड़ में हम किसे पीछे छोड़ रहे हैं, कौन हमारे साथ दौड़ते–दौड़ते अपना दम तोड़ रहा हैं, एक लम्बे अन्तराल की खाई में हर रिश्ता गुम होता जा रहा है, हम सब सिमटते जा रहे हैं, इस हद तक कि हम बौने होते जा रहे हैं, हमारा अस्तित्व मिटता जा रहा है। सालों –साल हम अपनों से मिल नहीं पाते, अपनों की खबर लिए बिना जीये जा रहे हैं। आखिर हम कहाँ आ गए हैं?

fcNMuk ftul] ukeefdu lkprs Fks----
muls gh fey s g, tekus xqtj x;A

पर क्या करें जिंदगी है और जिंदगी के अपने ही बुने हुए जंजाल हैं। वैसे भी जिंदगी में इतनी ख्वाहिशें होती हैं कि हर ख्वाहिश पर दम निकलता है। पर बात जहन में बसी दुनिया की उस चाहत की भी है जिसमें बहुत से काश होते हैं– जैसे कि काश जिंदगी में वो दिखता रहे जिसे देखकर दिल कहे...जिंदगी धूप तुम घना साया। पर ये साए उस वक्त रफूचक्कर हो जाते हैं जब जिंदगी पैसा, शोहरत और तमाम चीजों को हासिल करने की जिद बन जाती है। जिनके लिए हम अपना चैन, सुकून दांव पर लगा देते हैं और उस दौड़ती भागती सड़क पर जाकर खड़े होते हैं जिसकी मंजिल खुद हम ही भूल जाते हैं। कहां जा रहे हैं हम? किसे तलाश रहे हैं? किसके पीछे दौड़ रहे हैं? क्या मिल जाएगा और किसके खो जाने का डर है? क्यों जिंदगी ऐसी है जिसमें डर लगता है अपने अज़ीजों के बिछड़ जाने का? हकीकत तो ये है कि सुबह का बजता अलार्म दिन के शुरू होने की नहीं बल्कि जिंदगी की जंग पर जाने का हरकारा होता है। पता ही नहीं चलता कब सुबह होती है, कब शाम होती है और जिंदगी यूं ही तमाम होती है।

हम ज़िन्दगी में न जाने कितने लोगों से मिलते हैं, कुछ हमेशा के लिये स्मृतियों में छप जाते हैं। ये स्मृतियाँ कभी धुंधली भी नहीं पड़तीं। कहीं पढ़ा था कि कुछ लोग भूकम्प की भांति होते हैं, जो जहाँ भी पहुँचते हैं सिर्फ और सिर्फ तबाही मचाते हैं। कुछ लोग नदी की भांति होते हैं, जो अगर शांत हैं तो जीवन को हरा भरा कर देते हैं, पर रोष में आने पर सब तहस नहस कर देते हैं। काफी कम होतें हैं जो फल देने वाले छायादार पेड़ की तरह होते हैं, जो अपने पास से गुजरने वाले को छाँव, शुद्ध वायु और फल देते हैं, और तो और अपने अंदर जीवन न रहने पर भी कितने ही काम आते हैं। परन्तु मुझे लगता है कि हम उन्हीं के प्रति आकृष्ट होते हैं जिनसे हमारी प्राकृतिक रूप से वेवलेंग्थ (wavelength) मिल जाती है। ट्यून्ड वेवलेंग्थ के लोग कभी न कभी कहीं न कहीं मिल ही जाते हैं और एक खुशबु उकेर कर चले जाते हैं।

यहाँ एक किस्सा याद आ रहा है। डॉक्टर के क्लीनिक पर मेरे साथ उसकी माँ भी अपनी बारी का इंतज़ार कर रही थी। वो लाल रंग की एक सुन्दर फ्रिल वाली फ्रॉक पहने एक छह माह की बहुत प्यारी बच्ची थी। पांच–दस मिनट उसे पुचकारने से वो मुस्कुराने लग

*वरिष्ठ निजी सहायक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

गयी थी। फिर जब उसे गोद में लेने को हाथ बढ़ाया तो वह दोनों हाथ फैलाकर मेरी गोद में लपक आई। अगले बीस मिनट तक हम खूब हंसे, खिलखिलाए। उसकी माँ उसे मेरे पास ही छोड़कर डॉक्टर को दिखाने चली गयी। वो अपनी उजली चमकदार आँखों से मुझे देखती और मैं गुदगुदी करने के लिए उंगलियां उसकी ओर बढ़ाती और वो ज़ोर से खिलखिला उठती। हम दोनों एक साथ खुश थे। उसकी माँ ने बाहर आकर उसे गोद में लिया और जाने लगी। मैंने उसे टाटा किया और वो अपने दोनों हाथ फैलाकर मेरी गोद में आने के लिए लगभग पूरी लटक गयी। वो मचलती रही और कार तक जाते जाते वो दोनों हाथ फैलाए मेरी गोद में आना चाह रही थी। एक पल को ऐसा लगा जैसे वो मुझे बहुत अच्छे से जानती है। खैर उसे जाना था और वो चली गयी।

उसके जाने के बाद न जाने कितने चेहरे आँखों के सामने से घूम गये, जो जीवन के किसी न किसी मोड़ पर मिले थे फिर कभी न मिलने के लिए। उन्हें रुकने की ज़रुरत भी न थी। चंद मिनटों, घंटों या दिनों में वो अपना काम बखूबी कर गए थे। इनमे से कई हमें बहुत कुछ दे जाते हैं, अपनी कहानियों, अनुभवों की शक्ल में और कई हमसे कुछ ले जाते हैं। ऐसे लोगों का मिलना शायद हमें अन्दर से समृद्ध करने के लिए होता है! तभी तो वो चेहरे कभी न भूल सके। जिंदगी कितनी सारी चाहतो का सिलसिला है, कोई मिल गया तो कोई बिछड़ गया, ज़िंदगी की चलती राह पे हजारो लोग मिले, कोई अभी भी साथ है, कोई बीच राह में इस दुनिया से चला गया। कई बार तो वही लोग चले गये जिन्होंने इन राहों पे चलना सिखाया, इस जिंदगी से लड़ना सिखाया, दिलो को मिलना सिखाया, मंजिलो को पाना सिखाया, कुछ खो जाने पर उसे वापस से पाना सिखाया, किसी को मिलके हमेशा के लिए बिछुड़ना अच्छा तो नही लगता पर वापस उनके पास जाकर मिलने का रास्ता भी तो खुदा ने नही बनाया ना। मिलना बिछुड़ना किस्मत का खेल है ऐसा बहुत बार सुना है लोगो की जुबान से और भागवत गीता मे पढ़ा भी है कि ये शरीर नश्वर है जो समय आने पर नष्ट हो जाता है परन्तु आत्मा अमर है जो अनन्तकाल तक शरीर बदलती रहती है और समय के साथ गमन करती है जो आया है वो अपने कार्य समाप्त करने के पश्चात चला जायेगा, कोई भी शक्ति उसे यहाँ रहने के लिए बाध्य नहीं कर सकती। पर हम आज भी इस बात को समझने के काबिल कहाँ। हमारी ज़िंदगी से कितने सारे लोग चले गये पर शायद आज भी उनका वजूद हमारे पास है, हमेशा के लिए।

मिलना और बिछुड़ना, बिछुड़कर फिर से मिलना, कितना सुखद होता है। और कितना सुखद होता है उन बीते पलों का लौट कर आना जो हमने साथ – साथ बिताए थे, जब भी मैं सोचती हूँ उन पलों को – एक स्वप्न सा प्रतीत होता है, एक ऐसा स्वप्न जो मेरा होकर भी मेरा नहीं, जिसकी अवधि की कोई सीमा नहीं, कभी अकेले में बैठकर यूँ ही सोचा करती हूँ कितना अच्छा होता यदि केवल मिलना ही मिलना होता फिर बिछुड़ने का ना कोई गम होता और जीवन का एक अलग रंग होता। फिर सोचती हूँ वह रंग तो केवल एक होगा, उसमें न तो विभिन्नताएं होंगी और न उसमें प्रकृति की छटाएं, इसलिए बिछुड़ना भी जरूरी है फिर से मिलने के लिए और जीवन को नए रंग देने के लिए।

धीरे–धीरे, एक–एक दिन, वक़्त गुजरता जा रहा है, हर एक लम्हे को जिया और खुश रही, कुछ राहों में नए लोग मिले तो कुछ पुराने रिश्ते टूट गए। बहुत मुश्किल होता सफर में अकेले चलना, परन्तु धीरे–धीरे यकीं हुआ कि हर सफर में कोई हमसफ़र नहीं होता। मिलना–बिछुड़ना तो लगा रहता है। जब तक मंज़िल ना मिले यूँ ही चलते रहो शायद मंज़िल मिल जाये तो कुछ खोये हुए लोग भी मिल जाये, अभी उम्मीद बाकी है परन्तु ये मिलने और बिछुड़ने का सिलसिला यूँ ही चलता रहेगा, वक़्त तो थमता नहीं और अपनी रफ़्तार से चलता रहेगा। मिलना बिछड़ना इस संसार का नियम है, आज तुम यहाँ हो, कल तुम्हारे जाने का किसको गम है। इस जीवन में क्या खोया, क्या पाया यह मत सोचो बस जब अंतिम बार पलकें मुंदे तो ये सोच कर अपनी राह निकल जाना कि तुमने हर रिश्ते को अपनी जिंन्दगी में बखूबी निभाया।

feyd fcNMuk nLrj g ftnxh dk]
,d ;gh fdLlk e'kgj g ftnxh dk]
chr g, iy dHkh ykV dj ugh vkr]
;gh lcl cMk dlj g ftnxh dk

विपरीत परिस्थितियों में भी मन को थामें

*रजनी सूद

जब से सृष्टि की रचना हुई है तबसे ही सृष्टि में उथल–पुथल होती आई है। जब से ईश्वर ने मानव की रचना की, मानव का जीवन कभी भी सदैव एक–सा नहीं रहा। प्रत्येक युग की बात करें तो मानव में, मानव मन में लगातार बदलाव होते आए हैं। वर्तमान युग में अपने मन को काबू करना बेहद कठिन है, हर इंसान सुखों की चाह करता है, क्या आपने कभी ऐसा देखा है कि कोई इंसान दुखों की चाहत करता हो? इंसान को सदैव सुखों की चाहत रहती है इसलिए सुख उससे दूर भागते हैं। वैसे भी प्रकृति का नियम है हम जिस चीज को पाने की इच्छा करते हैं वह सदैव हमसे दूर होती हैं, हमें नहीं मिल पाती। बिरले ही लोग होते हैं जिनकी समस्त कामनाऐं पूरी होती हैं। मेरी नजर में तो शायद ऐसा कोई शख्स होगा जिसकी सारी इच्छाऐं ईश्वर ने पूरी की हों। तब क्या किया जाए? क्या मनुष्य कुछ कर सकता है? न जीवन पर बस न मृत्यु पर बस। thou dk vkjHk viu jku l gkrk g vkj thou dk vr nljk d jku lA मन में सदैव प्रश्न उठता है कि आखिर ईश्वर ने मनुष्य की रचना क्यों की? सृष्टि की रचना करने की क्या आवश्यकता थी? खैर चूंकि ईश्वर ने हमारी रचना की है तो कुछ समझकर ही की होगी क्यूं नहीं हमें पशु या पक्षी बना दिया। मनुष्य का जन्म दिया तो इसका भी कोई न कोई तो कारण होगा। मनुष्य की जिंदगी में सुख और दुख, रात और दिन, हानि और लाभ, जीवन और मृत्यु का आना निश्चित है जिस पर मनुष्य का कोई जोर नहीं तो हम क्या करें ? मेरी नजर में केवल lei.k क्यों कि इसके अलावा हम कुछ कर भी नहीं सकते। शायद इसलिए गुरू नानक देव जी ने कहा था –

ukud nf[k;k lc lkj]
l[kh ogh tk uke vk/kkjA

अर्थात् नानक जी कहते हैं पूरा संसार दुखों का घर है कोई भी ऐसा नहीं जिसकी जिंदगी में दुख न हो। इस संसार में सुखी केवल वही रह सकता है जो अपनी जिंदगी ईश्वर की मर्जी पर आधारित मानकर जीता है।

हमारी इन्द्रियों को जो अच्छा लगता है वह सुख है जो हमारी इंन्द्रियों को नहीं भाता वह दुख है। अगर संसार में सारे काम हमारे मन मुताबिक होते रहते हैं तो हमें लगता है कि हम सबसे सुखी हैं और यदि ये सारे काम हमारी इच्छाओं के विरुद्ध होते हैं तो हमें लगता है इस संसार में हम से ज्यादा दुखी कोई नहीं। क्या वास्तव में ऐसा है? अगर सब कुछ हमारे हाथ में होता तो सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र को ऐसा जीवन न जीना पड़ता जो उन्होंने जीया।

ikuh e Mc rk eR; fuf'pr g
HkfDr e Mc rk efDr fuf'pr gA

समस्त संसार सूर्य के उदय होने से प्रसन्न होता है क्योंकि उसकी रोशनी से शक्ति मिलती है। लेकिन उल्लू को सूरज की रोशनी में कुछ दिखाई नहीं देता। क्या इसमें सूरज का दोष है? किसी घर में जब नए सदस्य का आगमन होता है तो सब उसका स्वागत करते हैं। इसी तरह हमें अपने जीवन में आने वाले सुख और दुख स्वागत करना चाहिए। इंसान को अपने जीवन में अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि समय अनुकूल हो या प्रतिकूल लेकिन कर्मों से भक्ति की और त्याग की सुगंध आनी चाहिए। कई बार इंसान अपनी जगह ठीक होता है, लेकिन दूसरों का व्यवहार उसे दुखी कर जाता है, जैसे कोई आलसी अपने कूलर की साफ–सफाई नहीं करता तो उससे उत्पन्न डेंगू उसको भी बीमार करेंगे और औरों को भी। इसी तरह से

*वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

जब मनुष्य का मन बीमार होता है और उसमें उल्टे–पुल्टे विचार आते रहते हैं तो वह मनुष्य दूसरों को भी उसी निगाह से देखता है जिस तरह के विचार उसके मन होते हैं। यदि कोई व्यक्ति रबड़ का टायर जलाता है तो उसका धुंआ उसके साथ–साथ दूसरों को भी सांस लेने में दिक्कत करता है। समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो दूसरों को तकलीफ देकर सुख का अनुभव करते हैं। जब मनुष्य पर प्रतिकूल समय आता है तब सब कुछ बिगड़ जाता है। आदमी को बेहद अकेलापन महसूस होने लगता है और अकेलेपन में दुख उसे और दुखी करता है। परिवार के संबंध बिखर जाते हैं, लोगों पर से विश्वास टूट जाता है।

u rk vui< jg]
u gh dkfcy g,
ge rk [kke[okg
nfu;k dk Ldy e nkf[ky g,A

दुर्भाग्य के क्षणों में गलत कार्यों के परिणाम तो गलत होते ही हैं पर कभी–कभी सही कार्य करते हुए भी दुख भोगना पड़ता है। एक आदमी पैदल सड़क पर चल रहा था और उसकी दिशा भी सही थी, परन्तु पीछे से किसी गाड़ी ने उसको टक्कर मार दी हालांकि उसकी गलती नहीं थी। बस मनुष्य की जिंदगी भी ऐसी ही है। सुख हमारी जिंदगी में देर तक नहीं रहते परन्तु दुख हमारी जिंदगी में दूर तक साथ देते हैं। इसलिए ऐसे समय में घबराना नहीं चाहिए। बस ईश्वर को याद करते हुए उस समय को गुजार देना चाहिए। शायद इसीलिए किसी कवि ने कहा है–

ये राहें ले ही जाएंगी मंजिल तक
हौंसला रख कभी सुना है अंधेरे ने सवेरा न होने दिया।

मौहम्मद गौरी ने लगातार 17 बार पराजित होने के बाद जंग में फतह हासिल की थी, इसलिए कभी भी जीवन में आए दुखों से घबराना नहीं चाहिए। ईश्वर दुख उन्हीं को देता है जो मजबूत होते हैं।

tehj ftnk j[k
dchj ftnk j[k
lYrku Hkh cu tk, rk
fny e Qdhj ftnk j[k
gkly y d rjd'k e]
dkf'k'k dk ok rhj ftnk j[k
gkj tk pkg ftnxh e lc dN
exj fQj thru dh
ok mEehn ftnk j[kA

जब दुख आता है तो लगता है इस संसार में मुझ से ज्यादा दुखी कोई नहीं, अगर आपको भी ऐसा लगता है तो किसी दिन वक्त निकाल कर किसी भी अस्पताल में चले जाईये, वहाँ जाकर आपको एहसास हो जाएगा कि दुनियां में कितना गम है, मेरा गम कितना कम है। आपकी जिंदगी में अगर किसी भी तरह का गम आए तो हंसी–खुशी उसका सामना कीजिए।

रहीम जी ने कहा है

रहिमन निज मन की बिथा,

मन ही राखो गोय

सुनी इठलै हैं लोग सब, बांटी

न लेहैं कोय।

अर्थः रहीम कहते हैं कि अपने मन के दुःख को मन के भीतर छिपाकर ही रखना चाहिए। दूसरे का दुःख सुनकर लोग भले ही हमदर्दी जताऐं परंतु कम तो वह ईश्वर की भक्ति से ही होगा। इसी जीवन को दुःखों और सुखों सहित खुशी से जिएं।

अपने दोष को हम देखना नहीं चाहते, दूसरों के देखने में हमें मजा आता है, बहुत सारे दुख तो इसी आदत से पैदा होते हैं।

कुछ लोग सफलता के सपने देखते हैं, जबकि कुछ लोग जागते हैं और कड़ी मेहनत करते हैं।

– महात्मा गांधी

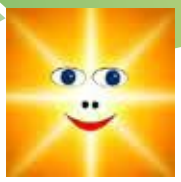

ज़रिया बनो एक मुस्कुराहट का.......

*रेखा दुबे

fc[kju nk gkBk ij glh d Qgkjk dk ;kjk] fdlh dk eLdjkgV nu l tk;nkn de ugh gkrhAA

बचपन में हम सभी को इस बात की गलतफहमी थी कि बड़े होते ही जिंदगी मज़ेदार हो जाएगी और बड़े हुए तो लगा कि हाथ तो पहले से ज्यादा खाली हैं। बचपन का हर एक पल आज हमारी खुशनुमा यादों का खजाना है।

वो बचपन की अमीरी न जाने कहां खो गई, जब बारिश के पानी में हमारे जहाज भी चलते थे। मुस्कुराहट के साथ सुबह होती थी और मुस्कुराते हुए ही शाम। हथेली में पैसे नहीं होते थे लेकिन बहुत अमीर थे। अब भाग–दौड़ भरी जिंदगी में कभी–कभी तो ऐसा लगता है कि मुस्कुराए हुए भी मुद्दत हो गई है। अपने आस–पास देखने की फुरसत ही नहीं है हमें। तनाव, चिंता, परेशानी ने हमें आगोश में कुछ इस तरह भर लिया है कि बस अब ये जीवन का पर्याय बन गए हैं। ये तो हम सभी जानते ही हैं कि तस्वीर के रंग चाहे जो भी हों, मुस्कुराहट का रंग हमेशा खूबसूरत होता है। मुस्कुराहट कोई बनी बनायी मिलने वाली चीज़ नहीं है यह अपने कर्मों से ही आती है

कई बार ऐसा होता है कि ऑफिस के लिए निकलते समय कोई नमस्कार भी करता है तो हम जल्दी में उस ओर ध्यान ही नहीं दे पाते और बाद में सोचते हैं कि कौन था जो मुस्कुरा कर मिला और हम उसे एक स्माइल भी नहीं दे पाए। हमारे आसपास कई घटनाएं घट जाती हैं जिनसे निगाहें चुराते हुए हम निकल जाते हैं। अब तो लगता है कि ^^r vpkud fey xbl rk dl igpkux r>] , [k'kh--- r viuh ,d rLohj Hkt nA^^ मानवता या इंसानियत कहीं खो सी गई है। कभी फुरसत के पलों में इस ओर भी ध्यान देने की आवश्यकता है। लेकिन ये फुरसत के पल कब मिलेंगे? ये प्रश्नचिह्न है? हम अक्सर सड़क पर आते–जाते कई ऐसी दुर्घटनाओं से रूबरू होते हैं लेकिन रुककर उनकी मदद को आगे नहीं आते और हमारा यही नज़रअंदाज रवैया कई बार घटना को दुर्घटना में परिवर्तित कर देता है। कई बार समय से की गई मदद किसी के जीवन के लिए अमृत के समान होती है। जब ऑफिस में कोई सहयोगी ऐसी दुर्घटना का जिक्र करते हैं तो हम दुख व्यक्त करते हैं कि लोग भीड़ में खड़े बस निहारते हैं। ये कभी नहीं सोचते कि ये भीड़ हम जैसे लोगों से ही मिल कर बनी है। दिल्ली की सड़कों पर आए दिन सड़क हादसों में कई मौतें हो रही हैं और हम सभी मूक दर्शक की तरह बस खबर सुनकर अपनी संवेदना व्यक्त कर रहे हैं। हम सभी की छोटी सी पहल एक रुकती हुई जिंदगी में जीवन दे सकती है। लेकिन ये व्यस्तता हर घटना को भुला देने पर मजबूर कर देती है और हम बस घटनास्थल से चुपचाप सरक जाने में ही भलाई समझते हैं।

इसी प्रकार हमारे दैनिक जीवन में भी कई ऐसे लोग हमारे आसपास होते हैं जिनके चेहरे पर हमारी एक छोटी सी मदद मुस्कुराहट ला सकती है किसी भूखे को खाना देकर और किसी का तन ढक कर। हम सभी के घरों में इतने वस्त्र ऐसे हैं जिन्हें हम पहनते तक नहीं इसलिए नहीं कि वो अब अच्छे नहीं रहे बल्कि इसलिए कि हमारे पास इतने वस्त्र हैं कि हम उन को भूल से गए हैं। ऐसे में अपनी अल्मारी को थोड़ा खाली कीजिए और उन वस्त्रों को किसी जरूरतमंद को दीजिए और उसके चेहरे पर मुस्कुराहट लाने का ज़रिया बनिये। देखिये ये अनुभव आपके लिए खुशियों से भरा होगा। किसी भूखे को एक दिन रोटी खिला कर देखिये उसकी संतुष्ट आत्मा आपको कितनी दुआएं देगी। हम ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ रचना है और अगर हम इतने समर्थ है तो उस परमात्मा का धन्यवाद है जिसने हमें बहुतों से बेहतर जीवन दिया और इस जीवन को क्यूं न ऐसा बनाएं कि किसी के जीवन में खुशी लाने का ज़रिया बने और बदले में आपकी झोली भी खाली नहीं रहेगी। आपको मिलेंगी इतनी दुआएं जो आपके जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर करेंगी। खुशियां तो चंदन की तरह होती हैं। दूसरों के माथे पर लगाओ तो अपनी उंगलियां भी महक जाती हैं।

mnkfl;k dh otg ; rk cgr g ftnxh e] ij fdlh d thou e [k'kh yku dk etk gh dN vkj gA

*सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

दिशाहीन होती युवा पीढ़ी

* विजयपाल सिंह

हम जानते हैं कि जोश और जुनून में डूबे रहने वाली युवा पीढ़ी ही देश का भविष्य है और देश की युवा शक्ति ही उसका सबसे बड़ा हथियार होती है। लेकिन आज की युवा पीढ़ी को शायद अपनी इन ताकतों का अंदाजा ही नहीं है यदि वह चाहे तो इस देश की सारी रूपरेखा को बदलकर विश्व के पहले पायदान पर खड़ा कर सकते है। मैं जो आज की युवा पीढ़ी को देख रहा हूँ वह अपने ही हाथों अपने जीवन और भविष्य को बर्बादी के रास्ते पर ले जा रही है। बाहरी दिखावटों, पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर अपने आदर्शों और संस्कारों को भूलती चली जा रही है। जोश, जुनून, दृढ़ संकल्प, इच्छाशक्ति एवं हौसले की जगह नशा, वासना, लालच, हिंसा उनके जीवन में शामिल हो गए हैं। दिन–प्रतिदिन आज की युवा पीढ़ी दिशाहीन होकर बुराई और अपराधों के गहरे गर्त में गिरती चली जा रही है। राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर प्रस्तुत है युवा पीढ़ी को दिशाहीन बनाने वाली कुछ बुराइयाँ–

अब आम हो चला है कि एक हाथ में सिगरेट और दूसरे में शराब लिए पार्टियों में युवाओं को देखा जाना। लड़के तो लड़के अब तो लड़कियां भी सिगरेट, शराब पीने में पीछे नहीं हैं। आज के युवाओं की पार्टी बिना नशे के अधूरी समझी जाती है। जिस प्रकार से मैट्रो देश में अपना जाल बिछा रही है ठीक उसी तरह से अब यह कल्चर देश के छोटे शहरों में भी पैर पसारने लगा है। बात सिर्फ सिगरेट, शराब तक ही सीमित नहीं रह गई है, गांजा, चरस, अफीम, भांग और ड्रग्स तक भी पहुंच चुकी हैं। अपने मजे के लिए किया गया यह शौक कब उनकी जिंदगी का अहम हिस्सा बन जाता है और कब वे इसकी गिरफ्त में आ जाते हैं उन्हें पता भी नहीं चलता। आज के युवा अपने शौक की आड़ में सारे संस्कार तथा आदर्श भूल गए हैं। जो विदेशी संस्कृति युवाओं द्वारा अपनाई जाती है, उसे हमारे देश की संस्कृति और मान्यताएं आज भी बुरा ही मानती हैं। आज के युवाओं के लिए विदेशी संस्कति ऐसी आदत बन चुकी है जिसके लिए वे कोई भी कीमत चुकाने के लिए तैयार हैं। उनकी यही

आदत अनेक रोगों के रूप में उभर कर आती है। जानलेवा बीमारी एड्स और अन्य यौन संक्रमण उनकी इसी लत का ही परिणाम है।

मैंने देखा है कि आज का युवा नशे का आदी होने के कारण हिंसक और गुस्सैल प्रवृत्ति का भी शिकार हो गया है। आए दिन उनके लड़ाई–झगड़े होते ही रहते हैं। देश में हो रही आपराधिक गतिविधियों में 75 प्रतिशत युवाओं की भागीदारी होती है। अपने बेकाबू गुस्से के चलते युवा किसी की भी जान लेने से नहीं चूकते। आज कितने ही युवा अपराधों की दलदल में फंसते जा रहे हैं। पढ़ने–लिखने और भविष्य संवारने की जगह वह अपनी लाइफ गुंडागर्दी करने, दहशत फैलाने, लोगों को परेशान करने में व्यतीत करते है। हिंसक होने के साथ ही आज कई युवा संस्कारविहीन भी हो गए हैं। बड़ों के लिए आदर, छोटों के लिए प्यार तो उनके मन में बचा ही नहीं है। आंखों पर अभिमान की पट्टी बांधे खुद को सारे संसार का शहंशाह मानने लगे हैं। इन बुरी लतों के साथ–साथ आज के युवा लालची भी हो गए हैं। जितनी चादर उतने ही पैर पसारने की यह कहावत उन्हें गलत लगती है। उन्हें अपनी चीजों से कभी आत्मसंतुष्टि नहीं होती। उन्हें हमेशा दूसरों की चीजें ही भाती हैं। कई बार तो इन वस्तुओं को पाने के लिए वे किसी भी हद से गुजर जाते हैं। उनका

*कनिष्ठ अधीक्षक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

यही लालच उन्हें अपराधी बना देता है। बदलते दौर की चकाचौंध उसे लालची और स्वार्थी बनाती जा रही है।

आज के युवा में धैर्य की कमी है और इसी के कारण आज का युवा सब चीज बस जल्द से जल्द पाना चाहता है। आगे बढ़ने के लिए वे कड़ी मेहनत करने की बजाय शॉर्टकट्स ढूंढने में लगे रहते हैं। कम समय में सारी आधुनिक चीजों को पाने के लालच में उनमें समझदारी की कमी नजर आती है। आज के युवाओं में उस लगन, मेहनत, जोश, उमंग और धैर्य की कमी है जिसके बलबूते पर स्वामी विवेकानंद ने युवाओं से उम्मीदें लगाई थीं।

अपने विचारों और आदर्शों के कारण युवा युग–पुरुष कहे जाने वाले स्वामी विवेकानंद जी का जन्मदिन हर साल युवा दिवस के रूप में मनाते हैं। उनको याद करके हम औपचारिकता तो निभा लेते हैं, उनके विचारों को भी स्मरण कर लेते हैं, लेकिन क्या आज की युवा पीढ़ी को गलत दिशा में जाने से रोकने का प्रयास करते हैं? क्या यह जानने की कोशिश करते हैं कि आज का युवा देश के भविष्य निर्माण में कितना सहभागी है? जरा सोचिए, क्या हम इस पीढ़ी को देश का भविष्य कहेंगे जो खुद अपने भविष्य को लेकर दिशाहीन है?

यह सच है कि सारा युवा वर्ग इन बुराईयों की चपेट में नहीं है, यह भी सच है कि इसी देश के युवाओं ने अपना एक स्वर्णिम आकाश तैयार किया है, खेल से लेकर राजनीति तक और उद्योग से लेकर कला तक युवाओं ने एक अनोखी छाप छोड़ी है और देश उनके योगदान पर गौरवान्वित भी हुआ है, लेकिन जो बुराई में जकड़े हैं, क्या वह इस देश की जिम्मेदारी नहीं है? आने वाले युवा दिवस पर देश के हर युवा से मेरा निवेदन है कि वे अपने को पहचाने, बड़ों के कहे पर ध्यान दें, मेरे देश के युवाओं आज देश को तुम्हारी जरूरत है। हमारे देश के प्रधानमंत्री जी का भी तो यही नारा है।

कलम रो पड़ी आज मेरी.....

*** मनीषा पी सोनी**

माँ, काश मैं आज स्कूल न जाता,
शायद तुम्हें फिर से देख पाता,
तेरी आवाज़ सुनने को कान तरस रहे हैं,
देखो न माँ बारूदों के गोले बरस रहे हैं,

सारे बच्चे अपनी–अपनी माँ को पुकार रहे हैं,
माँ ये लोग हमें क्यों मार रहे हैं,
टिफिन में दी तुम्हारी रोटी भी नहीं खाई है,
माँ आज गोलियों ने मेरी भूख मिटाई है,

पापा से कहना अब मुझे स्कूल लेने न आएं,
देख नहीं पाऊँगा उन्हें मेरा जनाज़ा उठाये,
मेरे जाने से अपना हौसला मत खोना,
माँ मुझसे बिछड़ कर तुम मत रोना,

मेरे खिलौने, मेरी क़िताबें, मेरा बस्ता, जानता हूँ
तेरी आंखें देखती रहेंगी रोज़ मेरा रास्ता,
भैया से कहना उसका साथी रूठ गया है,
बचपन का हमारा साथ छूट गया है,

अप्पी से कहना मेरे लिए आंसू न बहाए,
रोज़ मेरी तस्वीर को छोटा सा फूल चढ़ाये,
तेरी यादों में, ख्वाबों में, ज़िक्र में, रह जाऊंगा.....

माँ मैं अब कभी वापिस नहीं आऊंगा.....
माँ मैं अब कभी वापिस नहीं आऊंगा.....

*वेअरहाउस सहायक–।।, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

आशावादी

*अरविंद मिश्र

जी हाँ आशावादी! किसी को कोई एतराज हो तो हो। मुझे किसी से क्या मूसर पलटवाना है। लोगों का काम केवल इतना है कि दूसरे के काम में अपनी टाँग अड़ाना। मैं न तो ऐसा कुछ अनर्गल काम करता हूँ, न ही किसी को कुछ ऐसा–वैसा करने देता हूँ। जो कहना साफ कहना और सुखी रहना, फिर क्या कहना अपने लिए यही है गहना। इस संसार में जीवन यापन के लिए बहुत पापड़ बेलने पड़ते हैं। इसका यहाँ कोई अर्थ नहीं है कि आप महिला हैं या पुरूष हैं कोई अच्छे लाल भी होंगे तो बला से। रही पापड़ों की बात सो वह तो यहाँ बेलना ही पड़ेंगे खराब या अच्छे की बात से मेरा सरोकार नहीं है फिर हर बात से मैं ही सरोकार क्यों रखने लगा। भाई और भी लोग है जमाने में। यदि संख्यात्मक रूप से पूँछो तो मैं वह जानकारी भी रखता हूँ कि एक अरब 27 करोड़ के आगे चल रहा है आबादी का आँकड़ा और मैं यह पूरी आशा करता हूँ कि इसी तरह से दिन–दूनी, रात–चौगुनी तरक्की यह मुल्क करता रहेगा। भला किसी चीज में तो आगे बढ़ रहा है।

चूँकि, मैं निराशावादी नहीं हूँ इसलिए इसका सम्पूर्ण भार मेरे सिर और कंधों पर है कि मैं प्रत्येक क्षेत्र में आशा की किरण को न केवल गौर से देखूँ बल्कि पूरे मनोयोग से आशाओं की ओर टकटकी लगाकर देखता रहूँ। मुझे इतना तो पता है कि किसी 'आशा' को मैं ऊपर से नीचे टकटकी लगाकर प्रेम से निहार सकता हूँ। यह भी कि उसने कौन से केश निखार शैम्पू का प्रयोग किया है, उसके तन–बदन से किस कम्पनी के साबुन, तेल और परफ्यूम की सुगंध आ रही है। परिधानों की सज्जा में किस ड्रैस–डिजायनर का योगदान सिर चढ़कर बोल रहा है। सैंडिल या चप्पल किस प्रकार के शिल्प की पोषक हैं और यह भी कि यदि कुछ ऊँच–नीच बात हुई या बात आगे बढ़ी तो वे कितनी कारगर सिद्ध होगी। वैसे आशाएँ हमेशा मेरे साथ रही हैं और ऐसी नौबत कभी नहीं आई एक तो हम स्वयं कभी ऐसा कुछ नहीं करते जो आशाओं के विपरीत हो। चीजों का गंभीरता पूर्वक मुआयना करना अलग बात है। खैर! इस तरह के प्रपंचों में न तो आपको, न ही हमें न ही किसी पंच या सरपंच को पड़ना चाहिए। सबके काम अलग–अलग हैं। फिर आशावादी तो सरनेम और तकल्लुफ भी होता है। फालतू के विवादों में पड़ने से कहीं बेहतर है कि आशावादी बने रहो। यूँ तो वाद और वादियों की इस संसार में कमी नहीं है, आप निकल कर देखिए, लोग आपको किसी न किसी वाद का सरगना बना ही डालेंगे। यहाँ मोटे तौर पर सभी लोग किसी न किसी वाद के शिकार है। निर्विवादी शायद ही कोई मिले। चाहता तो मैं अवसरवादी भी बन सकता था। लेकिन, नहीं बना। हाँ यदि राजनीति में होता तो बेहतर है कि आप अवसरवादी हों। दूसरे वादियों को मैं छेड़ना ही नहीं चाहता क्योंकि समय प्रपंचवादी है। लोग किसी की भी टाँग लेकर खींचना शुरू कर देते हैं। इसी कार्य से बहुत नाम हो जाता है। आप जितनी बड़ी टाँग खीचेंगे उतना आपका नाम उछलेगा। नाम उछलने से कोई न कोई उसे थाम ही लेता है।

हम तो ठहरे लिखने–पढ़ने वाले आदमी। अपना काम तो रोटी–रोज़गार लिखना–पढ़ना है। फालतू के कामों से क्या लेना–देना ? वो समय भी अब नहीं रहा जब कवि–लेखक किसी राजाश्रय में पालतू होते थे। वह मामला पंसद–नापसंद का भी था। अब तो अपना पूरा मामला आशावादी के नाम पर टिका हुआ है कोई छाप दे यह आशा। कोई इनाम या पुरस्कार थमा दे ये आशा। लोग तालियाँ बजाएँगे ये आशा। घर वाले घर में रहने देंगे या नहीं ये आशा। कुल मिलाकर इस फील्ड का पूरा कारोबार आशाओं पर टिका हुआ है। फलाँ कार्यक्रम में बुलाया जाएगा या नहीं। बुलाया गया तो अध्यक्षता कौन करेगा? समग्रता में यह है कि पूरी तरह से आशावादी बने रहो 'न' का नकार भी मन से निकाल दीजिए। जिससे लाभ यह होता है कि हम बड़े जलसे के आरंभ होने तक अपनी पूरी पॉजिटिव एनर्जी को संजोये हुए अपने कर्म पथ पर वीरतापूर्वक अग्रसर बने रहते हैं। इस कारण घोर आशावादी बने रहने में नुकसान की जगह फायदा ही फायदा है। मैं कहता हूँ गली–मोहल्ला और गांव–बस्ती शहर के लोग एक न एक दिन आपको कवि, लेखक, साहित्यकार के पद पर जरूर बिठाएँगे। इसलिए हमेशा तैयार रहें। चुस्त–दुरूस्त रहें। वह घड़ी कभी भी आ सकती है–'श्री श्री आशावादी जी।' आप सदैव तैयार रहेंगे तो बग़ैर वक्त जाया किए, तत्काल हाजिर हो जाएँगे, अवसर का लाभ उठाने। जो कि बार–बार नहीं एक बार ही आता है। आशाओं का फलीभूत ज्वार–भाटा बनाम 'लाइफ टाईम एचीवमेंट अवार्ड' इसी पर तो आसमान टिका हुआ है, उसके लिए कोई खम्बे लगाने की जरूरत नहीं है।

*कनिष्ठ अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, भोपाल

निगमित कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालय, दिल्ली को मंत्रालय द्वारा राजभाषा पुरस्कार

निगमित कार्यालय द्वारा मंत्रालय को लाभांश का चैक प्रदत्त

निगमित कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन

निगमित कार्यालय में भंडारण भारती पत्रिका का विमोचन एवं राजभाषा टैब का शुभारंभ

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली के तत्वावधान में निगमित कार्यालय द्वारा आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन

क्षेत्रीय कार्यालय, नवी मुम्बई तथा चेन्नई को राजभाषा पुरस्कार

क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी कार्यशाला की झलकियां

भारतीय प्रबंध संस्थान, इन्दौर में प्रबंध विकास कार्यक्रम

भारतीय प्रबंध संस्थान, इन्दौर में दिनांक 07.12.2015 से 11.12.2015 तक केन्द्रीय भंडारण निगम के लिए कृषि व्यापार एवं आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन पर प्रबंध विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें निगमित कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालयों तथा वेअरहाउसों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम में इन्वेंटरी मैनेजमेंट, कॉन्ट्रेक्टर सलैक्शन, ट्रांसपोर्टेशन मॉडल एवं एप्लीकेशन, वेअरहाउस परफार्मेन्स, पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप, कैपेसिटी प्लानिंग आदि विषयों का गहन अध्ययन कराया गया। निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को इस कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विषयों की जानकारी मिली जिसके कारण यह कार्यक्रम निगम के कामकाज के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होगा।

मुक्तक

*** दिनेश कुमार**

दूर बहुत तुम चले गये, वापस आना मुश्किल है
जीवन भर याद तुम्हारी, हमें भुलाना मुश्किल है
सूनी है बेजान–सी है, अब जीवन की बगिया
फूल खिलेंगें, आंखों में स्वप्न, संजोना मुश्किल है

जिन्दगी तो जिन्दगी है, ये कहां रुक पायेगी
जैसी चाही काट ली, बाकी बची कट जायेगी
साथ देना और चलना, हर एक के दुख दर्द में
उद्देश्य निश्चित हो गया तो, मुश्किल सभी हट जायेंगी

आंगन में खुशियाँ भर दे, और आंखों में सपने दे
हर साथी मिलने वाला, बस तुमको अपनापन दे

*वरिष्ठ, सहायक प्रबंधक (लेखा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगम द्वारा आयोजित विभिन्न खेल गतिविधियाँ

*राजीव विनायक

निगम द्वारा समय-समय पर विभिन्न खेल गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इस तिमाही में आयोजित किए गए क्रिकेट, टेबल टेनिस एवं बैडमिंटन संबंधी आयोजनों की रिपोर्ट प्रस्तुत है।

क्रिकेट

1. छात्रवृत्ति प्राप्त खिलाड़ी शिवांक वशिष्ट ने वर्ष 2015–2016 के लिए दिल्ली का अन्डर 23 में प्रतिनिधित्व किया।
2. छात्रवृत्ति प्राप्त खिलाड़ी यीशु शर्मा ने वर्ष 2015–16 में हरियाणा का अन्डर 19 में प्रतिनिधित्व किया।
3. केन्द्रीय भण्डारण निगम की क्रिकेट टीम गाजियाबाद में इंदिरा में गांधी मीमोरियल क्रिकेट टूर्नामेन्ट में सेमी फाइनल तक पहुंची।
4. केन्द्रीय भण्डारण निगम की क्रिकेट टीम सत्यवती कॉलेज, नई दिल्ली में संदीप सूरी मेमोरियल क्रिकेट टूर्नामेन्ट में क्वार्टर फानइल तक पहुंची।

टेबल टेनिस

1. दिनांक 09.11.2015 से 13.11.2015 तक हुई प्रतियोगिता में सुश्री कृतिका मलिक ने दिल्ली राज्य की चैम्पियनशिप जीती।
2. दिनांक 09.11.2015 से 13.11.2015 तक हुई प्रतियोगिता में सुश्री सृष्टि गुप्ता एवं श्री शिवेन बंगा अपनी संबंधित श्रेणी में उप विजेता रहे।
3. श्री विनय चोपड़ा एवं सुश्री जागृति ई.एस.पी.ओ. टूर्नामेन्ट में उप विजेता रहे।
4. श्री सुशील टेकचन्दानी, सुश्री कृतिका मलिक एवं सुश्री सृष्टि गुप्ता ने चंडीगढ़ में हुए ई.एस.पी.ओ. ओपन टेबल टेनिस टूर्नामेन्ट में अपनी संबंधित श्रेणी जीती।
5. सुश्री कृतिका मलिक, सुश्री सृष्टि गुप्ता एवं श्री शिवेन बंगा नेशनल प्रतिनिधित्व हेतु दिल्ली स्टेट टीम में चयनित हुए।

बैडमिंटन

1. अक्तूबर, 2015 में आयोजित सारा स्टेट ओपन बैडमिंटन टूर्नामेन्ट में इसमें शुभ्म गुसांई एवं सुश्री संस्कृति सेमी फाइनल तक पहुंचे और श्री जयंक ने पुरुष डब्ल्स फाइनल जीता।
2. चंडीगढ़ में खेले गए ऑल इण्डिया रैंकिग ओपन बैडमिंटन टूर्नामेंट अक्तूबर 2015 में खेला गया जिसमें श्री हर्षित टेकचंदानी पंजाब, हरियाणा, गुजरात के खिलाडियों को हराकर पांचवे रांउड तक पहुंचे।

*सहायक महाप्रबंधक (प्रचार), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

निगम का तुलनात्मक कार्य-निष्पादन

दिनांक	*क्षमता (लाख टनों में)*	*क्षमता उपयोग*	*प्रतिशतता*
01.11.2014	102.80	78.43	76
01.10.2015	116.70	92.42	79
01.11.2015	111.54	85.98	77
01.12.2014	102.73	77.85	76
01.11.2015	116.61	89.72	77
01.12.2015*	116.28	87.18	75
01.01.2015	105.28	82.48	78
01.12.2015	115.88	88.17	77
01.01.2016*	114.69	87.75	77

*(अनंतिम)

अक्तूबर से दिसम्बर, 2015 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	**कार्यक्रम का शीर्षक**	**अवधि**
1.	भंडारण पैस्ट प्रबंधन एवं प्रधूमन पर लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम	06–20 अक्तूबर, 2015
2.	अंतरराष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग मानकों के अनुसार आईएफआरएस/आईएनडी–एएस	07–09 अक्तूबर, 2015
3.	संविदा प्रबंधन	26–28 अक्तूबर, 2015
4.	नेतृत्व विकास कार्यक्रम	28–29 अक्तूबर, 2015
5.	क्षेत्रीय कार्यालयों/निर्माण खंडों और निगमित कार्यालय के कार्यपालकों हेतु कार्मिक एवं प्रशासन पर बैठक एवं प्रशिक्षण	02–03 नवम्बर, 2015
6.	सीएफएस/आईसीडी/एएफएस/पीएफटी हेतु व्यापार के नए अवसर	23–24 नवम्बर, 2015
7.	157 वां अखिल भारतीय वेअरहाउसिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम (कनिष्ठ तकनीकी सहायक)	26 नवम्बर से 07 दिसम्बर, 2015
8.	भंडारण पैस्ट प्रबंधन एवं प्रधूमन पर लघु अवधि प्रशिक्षण कार्यक्रम	09–23 दिसम्बर, 2015

सेवानिवृत्ति के अवसर पर निगम परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है

(दिनांक 01 अक्तूबर, 2015 से 31 दिसम्बर, 2015 तक सेवानिवृत्त अधिकारी एवं कर्मचारी)

सं.	नाम सर्वश्री/श्रीमती	पदनाम	तैनाती स्थान	क्षेत्र
1	जीबान कृष्णा शाह	लेखाकार	क्षे.का.–कोलकाता	कोलकाता
2	ज्ञान प्रकाश	स. अभि (ई)	शाहगंज	लखनऊ
3	वीरेन्द्र कुमार	अ. अभि (ई)	नि.का.(योजना विभाग)	नि.का.
4	बैज नाथ	क.अधी.	गोरखपुर	लखनऊ
5	वी. भांजीराव	क.अधी.	बेहरामपुर	भुवनेश्वर
6	बी. अप्पा राव	क.अधी.	बोधन	हैदराबाद
7	राजकुमार	क.अधी.	आईसीडी, पटपड़गंज	दिल्ली
8	ई. राजेन्द्रन	क.अधी.	क्षे.का.–चेन्नई	चेन्नई
9	पी.एस. यादव	समप्र (सामान्य)	नि.का.(परियोजना विभाग)	नि.का.
10	ए.के. मुखोपाध्याय	वसप्र (सामान्य)	बहरामपुर, बीडी	कोलकाता
11	एन.के. वर्मा	वसप्र (सामान्य)	क्षे.का.–पटना	पटना
12	संजीव कुमार कूंडू	भंडारण एवं नि. अधि.	क्षे.का.–कोलकाता	कोलकाता
13	रमेश कुमार शर्मा	भंडारण एवं नि. अधि.	लाडवा	पंचकुला
14	श्रीमती अल्पना गुहा	भंडारण एवं नि. अधि.	क्षे.का.–कोलकाता	कोलकाता
15	राजेन्द्र सिंह यादव	अधीक्षक	सीएफएस–वाइटफील्ड	बंगलौर
16	वी. रेड्डी कवालूर	अधीक्षक	धारवाड़	बंगलौर
17	प्रफुल्लित शर्मा	अधीक्षक	नि.का.(निरीक्षण विभाग)	नि.का.
18	भारत भूषण	अधीक्षक	हनुमानगढ़–।	जयपुर
19	बी. सिंधू बैरागी	तक. सहायक	पानीहाटी	कोलकाता
20	ए.के. दीक्षित	वे.स.–।	इटावा	लखनऊ
21	अमर चक्रवर्ती	वे.स.–।	आई एण्ड ई कोलकाता	कोलकाता
22	श्रीमती कमल जीत कौर	वे.स.–।	मानसा	चंडीगढ़
23	मलखान सिंह	वे.स.–।	शियोपुरकलां	भोपाल
24	एस.एम. पठान	वे.स.–।	गोंदिया	मुम्बई
25	एम.एम. मोदक	वे.स.–।	आई एण्ड ई कोलकाता	कोलकाता
26	सुभाष चन्द राय	वे.स.–।	पानीहाटी	कोलकाता
27	रमेश मिश्रा	वे.स.–।	समस्तीपुर	पटना

28	नरेन्द्र पाल	वरि. फराश	नि.का.(क्रय विभाग)	नि.का.
29	आई सी चडढा	महाप्रबंधक (तक.)	नि.का.(तक. विभाग)	नि.का.
30	सुदीप कुमार चक्रवर्ती	लेखाकार	सीएफएस कोलकाता	कोलकाता
31	एम.दास कर्माकर	स.अ. (ई)	सीसी. कोलकाता	कोलकाता
32	एन.एन. गुप्ता	उमप्र (सा.)	क्षे.का.–जयपुर	जयपुर
33	तुषार कान्ती राय	विद्युत मिस्त्री	क्षे.का.–कोलकाता	कोलकाता
34	ए.के. गर्ग	अधी. अभियंता (सिविल)	क्षे.का.–लखनऊ	निर्माण खंड, दिल्ली
35	विजोय बनर्जी	क.अधी.	नि.का.(वित्त विभाग)	नि.का.
36	आर. भास्कर राव	क.अधी.	गंटूर	हैदराबाद
37	एन.के. दग्दी	प्रबंधक (लेखा)	नि.का.(वित्त विभाग)	नि.का.
38	टी.आर.शर्मा	वसप्र (लेखा)	नि.का.(वित्त विभाग)	नि.का.
39	के.सी.एस. नेगी	भंडारण एवं नि. अधि.	नि.का.(सतर्कता विभाग)	नि.का.
40	बी.पी. मौर्या	भंडारण एवं नि. अधि.	सूरत–I	अहमदाबाद
41	श्रीमती एच एस शीला	भंडारण एवं नि. अधि.	क्षे.का.–हैदराबाद	हैदराबाद
42	तहाल सिंह	अधीक्षक	क्षे.का.–चंडीगढ़	चंडीगढ़
43	कुन्दन नाथ	अधीक्षक	बोनहुगली	कोलकाता
44	के.के. कुलश्रेष्ठ	अधीक्षक	सीएफएस– डी नोड	नवी मुम्बई
45	पी गोपालन	वे.स.–I	सीएफएस– डिस्ट्री पार्क	नवी मुम्बई
46	एन.के. चन्द्रा	वे.स.–I	कुड्डालौर	चेन्नई
47	एम.इलिसा	वे.स.–I	राहमुंदरी	हैदराबाद
48	विकास चटोपाध्याय	वे.स.–I	आई एण्ड ई कोलकाता	कोलकाता
49	राम जीवन पाण्डेय	वे.स.–I	डुमरीगंज	लखनऊ
50	अमरीश कुमार	सप्र (सामान्य)	श्रीगंगानगर–I	जयपुर
51	शेर जगजीत सिंह	उमप्र (तकनीकी)	नि.का.(पीसीएस विभाग)	नि.का.
52	कमला प्रसाद	क.अधी.	एनएसईजेड	दिल्ली
53	खजान सिंह	क.अधी.	आईजीआई, पालम	दिल्ली
54	एल.जी. नवानी	क.अधी.	सीएफएस– कांडला पोर्ट	अहमदाबाद
55	डी.के. सिन्हा	क.अधी.	टी.टी. पैट्रापोल	कोलकाता
56	कमलेश सरकार	क.अधी.	क्षे.का.–कोलकाता	कोलकाता
57	हरीश चन्द्र	क.अधी.	इटावा	लखनऊ
58	धर्म सिंह	क.अधी.	क्षे.का.–चंडीगढ़	चंडीगढ़

59	राजकुमार	क.अधी.	एचएएल, लखनऊ	लखनऊ
60	ए.वी. राव	स.महा. प्रबंधक (सा.)	क्षे.का.–कोच्चि	कोच्चि
61	पंचम	प्रबंधक (सा.)	क्षे.का.–बंगलौर	बंगलौर
62	रंजीब बोरा	प्रबंधक (सा.)	क्षे.का.–गुवाहाटी	गुवाहाटी
63	डी.एस. विश्वकर्मा	व.स.प्र (सा.)	क्षे.का.–पटना	पटना
64	आलोक कुमार कोहली	व.स.प्र (सा.)	नि.का.(कार्मिक विभाग)	नि.का.
65	दिवाकर वर्मा	भंडारण एवं नि. अधि.	क्षे.का.–पंचकुला	पंचकुला
66	बी. भास्कर	भंडारण एवं नि. अधि.	क्षे.का.–हैदराबाद	हैदराबाद
67	पी. सुधाकर राव	भंडारण एवं नि. अधि.	गडग–।।	बंगलौर
68	रशीद मोहम्मद	भंडारण एवं नि. अधि.	कटनी	भोपाल
69	सी.सी. जॉन मैथ्यू	भंडारण एवं नि. अधि.	सीएफएस– लॉजिस्टिक पार्क	नवी मुम्बई
70	मुकेश यादव	भंडारण एवं नि. अधि.	आईसीडी– पटपडगंज	दिल्ली
71	शान अली खान	भंडारण एवं नि. अधि.	नि.का.(योजना विभाग)	नि.का.
72	वी.के. गर्ग	भंडारण एवं नि. अधि.	नि.का.(विधि विभाग)	नि.का.
73	ए.के. श्रीवास्तव	भंडारण एवं नि. अधि.	गोरखपुर	लखनऊ
74	अम्बरीश कुमार शर्मा	अधीक्षक	क्षे.का.–दिल्ली	दिल्ली
75	श्रीमती एस.एस.राउत	अधीक्षक	वडाला	मुम्बई
76	श्रीमती चंचल	अधीक्षक	क्षे.का.–चंडीगढ़	चंडीगढ़
77	पी. रविन्द्रन	अधीक्षक	सीएफएस– कुक्कटपल्ली	हैदराबाद
78	लेखराज सिंह	अधीक्षक	नाभा–बीडी	चंडीगढ़
79	राजकुमार शर्मा	अधीक्षक	बेवाड	जयपुर
80	डी.पी. सिंह	अधीक्षक	सूरजपुर	दिल्ली
81	जय नारायण	अधीक्षक	आर पी. बाग	दिल्ली
82	कान्ति प्रसाद	वरिष्ठ ऑपरेटर	नि.का.(मैंटेनेस सैल)	सीसी दिल्ली
83	एम. सेल्वराज	वे.स.–।	सिंगनालूर	चेन्नई
83	रेहास बिहारी	वे.स.–।	शाहजहांपुर	लखनऊ
84	जतीन्द्र जीत सिंह	वे.स.–।	अजीतवाल	चंडीगढ़
85	ईश्वर दयाल	वे.स.–।	साहिबाबाद–।।	दिल्ली
86	श्यामल चन्द्र दास	वे.स.–।	बर्धवान–।	कोलकाता

कार्यालय में प्रयोग होने वाले सामान्य वाक्यांश

1. You are hereby authorised	आपको इसके द्वारा प्राधिकृत किया जाता है
2. As discussed/ as spoken	चर्चा के अनुसार
3. I agreee	मैं सहमत हूं
4. I have no objection	मुझे कोई आपत्ति नहीं है
5. As proposed / suggested	यथा प्रस्तावित
6. Put up on the file	फाइल पर प्रस्तुत करें
7. Action may be taken as proposed	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए
8. I agree with 'A' above	मैं ऊपर ''क'' से सहमत हूं
9. I fully agree with office note	कार्यालय की टिप्पणी से मैं पूर्णतः सहमत हूं
10. Matter is under consideration	मामला विचाराधीन है
11. Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
12. Needful done	आवश्यक कार्रवाई की जा चुकी है
13. No action is required	किसी कार्रवाई की आवश्यकता नहीं है
14. Office to note and comply	कार्यालय ध्यान दे और इसका पालन करे
15. Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए
16. Please expedite the return of this filed	कृपया इस फाइल को शीघ्र लौटाएं
17. Please put up with previous papers	कृपया इसे पिछले कागजों के साथ प्रस्तुत करें
18. Your request can not be accepted	आपका अनुरोध नहीं माना जा सकता है
19. The bill was not accepted	बिल स्वीकार नहीं किया गया था
20. Letters are being sent.	पत्र भेजे जा रहे हैं
21. Spoken	बात कर ली
22. Seen and returned	देखकर वापिस किया जाता है
23. Self contained note	स्वतः पूर्ण टिप्पणी
24. Show cause notice	कारण बताओ नोटिस
25. So far as possible	यथासंभव
26. The file in question is placed below	अपेक्षित फाईल नीचे रखी है
27. The suggestion is quite in order	यह सुझाव बिलकुल ठीक है
28. Copy enclosed for ready reference	तुरन्त संदर्भ के लिये प्रतिलिपि संलग्न
29. The letter will send immediately	पत्र शीघ्र ही भेजा जाएगा
30. In pursuance of	के अनुसरण में

केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)
4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली–110016